अप्रैल 2016

दादावाणी

कीमत ₹ 10

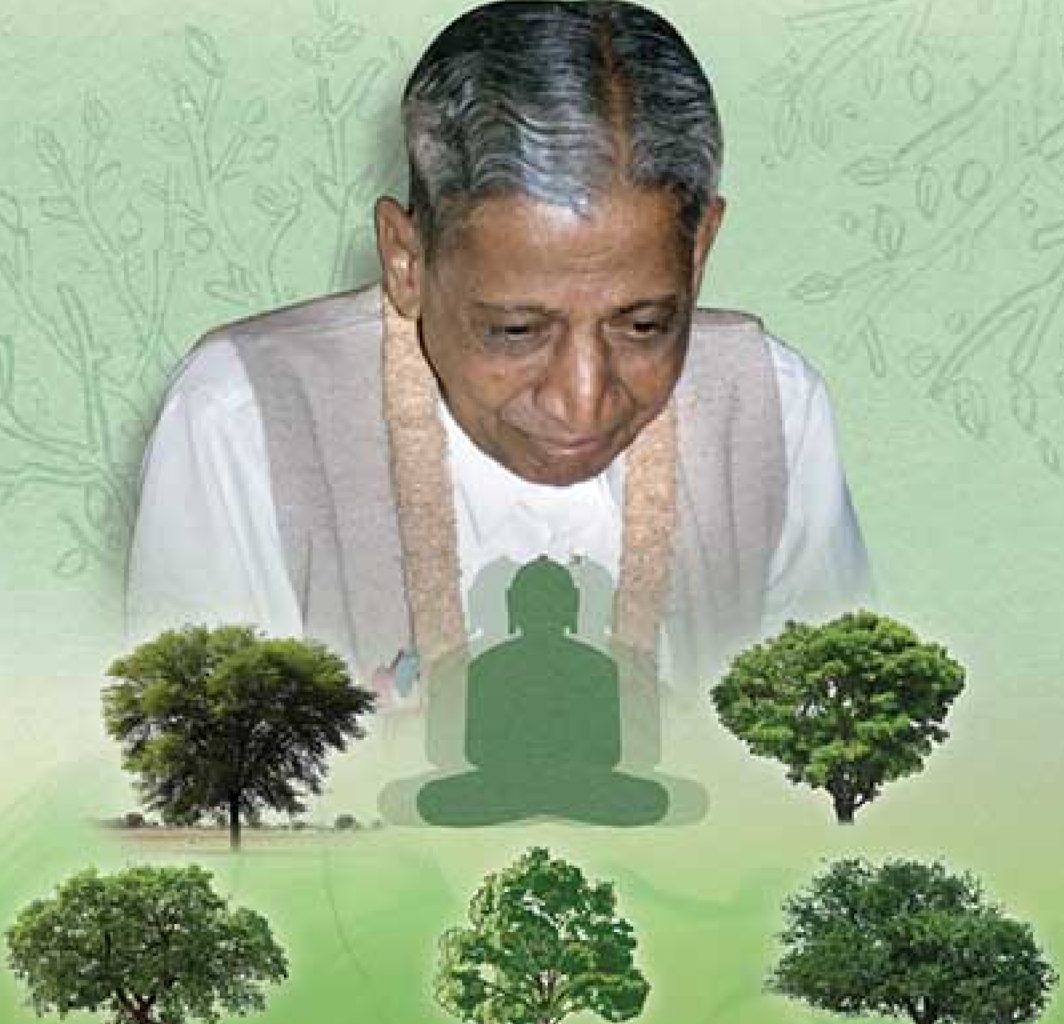

यह पैकिंग तो कैसी भी हो सकती है। कोई सागवान की होती है, कोई आम की होती है। कोई नीम की, कोई शीशम की और कोई बबूल की पैकिंग है लेकिन अंदर माल एक जैसा ही है। ये व्यापारी पैकिंग देखते हैं या भीतर का माल देखते हैं? असल व्यापारी पैकिंग नहीं देखता, इतना ही देखता है कि माल-सामान बिगड़ा हुआ नहीं है न!

संपादक : डिम्पल महेता
वर्ष : 11 अंक : 6
अखंड क्रमांक : 126
अप्रैल 2016

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज**,
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन : (079) 39830100
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
8155007500

Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Owned by
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Published at
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Total 36 pages including cover

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)

१५ साल
भारत : ७५० रुपये
यू.एस.ए. : १५० डॉलर
यू.के. : १०० पाउन्ड

वार्षिक
भारत : १०० रुपये
यू.एस.ए. : १५ डॉलर
यू.के. : १० पाउन्ड

भारत में D.D. / M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

रियल-रिलेटिव की भेदरेखा

संपादकीय

श्री कृष्ण भगवान ने कुरुक्षेत्र की रणभूमि में विषादग्रस्त अर्जुन को दिव्यचक्षु दिए। उन दिव्यचक्षुओं का उपयोग करके अर्जुन ने लड़ाई की और उसी जन्म में मोक्ष पाया। ऐसे ही दिव्यचक्षु महात्माओं को अक्रममार्ग द्वारा प्राप्त होते हैं। दादा भगवान के सिर्फ दो-घंटे के ज्ञानविधि के प्रयोग से रोंग बिलीफें फ्रेक्चर हो जाती हैं और राइट बिलीफ बैठ जाती है। फिर उन दिव्यचक्षुओं के उपयोग करके रिलेटिव दृष्टि से बाहर की पैकिंग दिखाई देती है और रियल दृष्टि से अंदर शुद्धात्मा दिखाई देता है। पुरुष की पैकिंग, स्त्री की पैकिंग, गधे की, कुत्ते की, मछली की, पेड़-पौधों की, तरह-तरह की पैकिंग, लेकिन अंदर माल एक ही प्रकार का, 'शुद्धात्मा' है।

जिसे यह ज्ञान मिला हो उसे तो एक मिनट की भी फुरसत नहीं होती। अनादि से उल्टा अभ्यास है इसलिए अब इस दृष्टि से सेट करते जाना है। धीरे-धीरे यह अभ्यास मज़बूत बनता जाएगा फिर सहज हो जाएगा और निरंतर समाधि रहेगी। पूरे दिन रियल-रिलेटिव के उपयोग में रहना है वह लक्ष (जागृति) में रहना चाहिए। अगर आज्ञा में नहीं रह पाएँ तो अंदर खेद होना चाहिए कि अंदर ऐसे तो कैसे कर्म के उदय लाए हैं कि हमें आराम से बैठने नहीं देते।

परम पूज्य दादाश्री कहते हैं कि शुद्धात्मा देखते हुए जाने में मुश्किल क्या है? उसे याद रखना है, उतना ही काम है न? निरंतर जागृति क्यों नहीं रहती? जहाँ लालच की जगह आए, जहाँ मीठा लगे, इन्टरेस्ट आए वहाँ पर भूल जाते हैं। इसलिए सावधान रहना चाहिए।

रिलेटिव सारा ही विनाशी है और शुद्धात्मा खुद अविनाशी है। अपना प्रदेश तो निराकुलता का है। निराकुलता में से थोड़ी भी व्याकुलता हुई कि 'यह अपना स्थान नहीं है' करके निराकुलता में रहना है। (रिलेटिव में) किसी कुर्सी पर जल जाएँ, किसी कुर्सी पर शॉक लगे, तब वहाँ से उठकर शुद्धात्मा की कुर्सी पर बैठ जाना है। रियल और रिलेटिव के विभाग अलग कर दिए हैं और अब उनके स्वभाव को पहचानना है।

शुद्धात्मा पर किसी भी प्रकार का असर नहीं होता, क्योंकि वह इफेक्टिव नहीं है। लेकिन जहाँ इफेक्ट हो जाता है, असर हो जाता है, वहाँ जागृति कच्ची पड़ जाती है। और कुछ नहीं आए तो 'मेरा स्वरूप नहीं है' ऐसा कहकर छूट जाना है। व्यवहार में, रिलेटिव में अनइज़ी लगे वहाँ खुद की भूल है। यों व्यवहारिक तौर पर (व्यवहारिकता से) सारी बात भले ही हो, लेकिन सिर्फ इतना ध्यान रखना है कि राग-द्वेष नहीं होने चाहिए। व्यवहार में होनेवाली भूलों को धोने के लिए 'रिलेटिव' में पश्चाताप और रियल में आनंद, ये दोनों होने चाहिए।

शुद्ध उपयोग उसे कहते हैं कि आनंद रहे। ऊब जाना शुद्ध उपयोग नहीं कहलाता। शुद्ध उपयोग में मन की उपस्थिति हो तब ऊब जाते हैं, यानी सेटिंग बदलने की ज़रूरत है।

प्रस्तुत संकलन में रिलेटिव में पैकिंग स्वरूप और रियल में शुद्धात्मा, उसके अभ्यास के लिए दादाश्री ने अनेक उदाहरण दिए हैं कि अपना भाग कौन-सा है और पराया भाग कौन सा। आत्मा के अनुभव की कक्षा तक पहुँचने के लिए और निरंतर आज्ञा में रहने के उपाय बताए हैं, जो कि महात्माओं को रिलेटिव और रियल देखने का प्रयोग सिद्ध करने में सहायक होंगे, यही अभ्यर्थना है।

- **जय सच्चिदानंद**

पाठकों से...

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी चंदूभाई नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें। ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

रियल-रिलेटिव की भेदरेखा

दुनियाई पज़ल का एकमात्र सॉल्युशन

द वर्ल्ड इज़ द पज़ल इटसेल्फ। यह पज़ल सॉल्व किस तरह की जा सकती है? देअर आर टू व्यू पोइन्ट्स टु सॉल्व दिस पज़ल। वन रिलेटिव व्यू पोइन्ट एन्ड वन रियल व्यू पोइन्ट। बाइ रिलेटिव व्यू पोइन्ट यू आर चंदूलाल एन्ड बाइ रियल व्यू पोइन्ट आप 'शुद्धात्मा' हो। इन दो व्यू पोइन्टस से जगत् को देखोगे तो सारे ही पज़ल सॉल्व हो जाएँगे। भगवानने इसी को दिव्यचक्षु कहा है।

देखो जगत् को दिव्यचक्षु से

(ज्ञानविधि में आपको) ये दिव्यचक्षु दिए हैं (इसलिए) अब इन बाहर की आँखों से पैकिंग दिखाई देगा और अंदर की आँखों से शुद्धात्मा दिखाई देगा। आपकी समझ में आया आज? बाइ रिलेटिव व्यू पोइन्ट यू आर?

प्रश्नकर्ता : चंदूभाई।

दादाश्री : और रियल व्यू पोइन्ट से?

प्रश्नकर्ता : शुद्धात्मा।

दादाश्री : तो आपकी वाइफ (पत्नी) रिलेटिव व्यू पोइन्ट से?

प्रश्नकर्ता : वाइफ।

दादाश्री : और रियल व्यू पोइन्ट से?

प्रश्नकर्ता : शुद्धात्मा।

दादाश्री : वह भी शुद्धात्मा है, वह भले ही जानते न हो, लेकिन अंदर शुद्धात्मा है। जो नहीं जानता वह (संसार में) मार खाता है। यह जानने की ज़रूरत है। असल में यही वास्तविकता है। यह गाय है न, वह बाइ रिलेटिव व्यू पोइन्ट गाय है और बाइ रियल व्यू पोइन्ट शुद्धात्मा। यह बकरी रिलेटिव व्यू पोइन्ट से बकरी है और रियल व्यू पोइन्ट से शुद्धात्मा। भगवान की भाषा में हर एक पैकिंग में शुद्धात्मा का माल है। समुद्र में कितने प्रकार की पैकिंग होती हैं, हैं न? बड़ी-बड़ी व्हेल मछलियाँ और इतनी छोटी मछलियाँ। यहाँ गाय-भैंस, हाथी वेराइटीज़ ऑफ पैकिंग, (लेकिन) अंदर माल एक ही प्रकार का, शुद्धात्मा।

ये सब तरह-तरह की पैकिंग हैं। ये पुरुष पैकिंग, स्त्रियाँ पैकिंग, कुत्ते, बिल्ली सभी पैकिंग के अंदर खुद भगवान रहते हैं। यह देह तो पैकिंग है। भीतर जो बैठे हैं, वे भगवान हैं। यह आपकी भी चंदूलाल रूपी पैकिंग है और भीतर भगवान विराजे हैं। यह गधा है, तो यह भी गधे का पैकिंग है और भीतर भगवान विराजे हैं। लेकिन इन अभागों की समझ में नहीं आता, इसलिए गधा सामने आए, तो गाली देते हैं, जिससे गधे में विराजे हुए भगवान नोट कर लेते हैं और कहते हैं, 'हम्म्... मुझे गधा कह रहा है, जा अब तुझे भी एक जन्म गधे का मिलेगा।'

पैकिंग अलग, अंदर माल एक जैसा

यह पैकिंग तो कैसी भी हो सकती है। कोई सागवन की होती है, कोई आम की होती है। कोई नीम की, कोई शीशम की और कोई बबूल की पैकिंग है। लेकिन अंदर माल एक जैसा ही है। ये व्यापारी पैकिंग देखते हैं या भीतर का माल देखते हैं?

प्रश्नकर्ता : माल देखते हैं।

दादाश्री : हाँ, पैकिंग का क्या करना है? काम तो माल से ही है न? कोई पैकिंग सड़ी हुई हो, टूटी-फूटी हो, लेकिन माल तो अच्छा है न? वह सामान पहचान लिया तो काम बन गया। असल व्यापारी पैकिंग नहीं देखता न? इतना ही देखता है कि माल-सामान बिगड़ा हुआ नहीं है न।

हम सभी पैकिंग के कारण अलग-अलग दिखाई देते हैं, लेकिन आत्मा से तो हम सभी एक ही हैं।

आज्ञा पालन से रहता है शुद्धात्मा का उपयोग

अब आपको यह जागृति निरंतर रहेगी। आपके पापों को भस्मीभूत कर दिया है। इसलिए यह निरंतर शुद्धात्मा की जागृति रहेगी। क्षणभर के लिए भी चूके बगैर। सिर्फ हमारी आज्ञा का पालन करना है। इसलिए ये पहली दो आज्ञाएँ दी हैं, फर्स्ट रिलेटिव व्यू पोइन्ट, सेकन्ड रियल व्यू पोइन्ट। तो सुबह जब बाहर जाओ, तो इन दोनों व्यू पोइन्ट से देखते-देखते जाओ तो कोई आपत्ति उठाएगा? गाय को भी देखना है और अंदर शुद्धात्मा को देखना है। ऐसे देखते-देखते एक घंटा देखें, तो किसी को आपत्ति होगी क्या?

प्रश्नकर्ता : बिल्कुल नहीं।

दादाश्री : और हम रहे शुद्धात्मा के उपयोग में। इन दोनों आज्ञाओं का पालन करना कठिन है क्या? कठिन नहीं लगती हैं न?

प्रश्नकर्ता : नहीं, कठिन नहीं हैं।

दादाश्री : (हाँ, और) अगर ये नहीं पुसाए तो भी कह देना कि 'भाई, इन आज्ञाओं का पालन नहीं किया जा सकेगा, मुझे दूसरी दीजिए।' ये आसान हैं न?

प्रश्नकर्ता : आसान हैं।

दादाश्री : अब कठिन तो इतनी ज़्यादा है कि जागृति ही नहीं रहे, लेकिन आपको यह जागृति रहेगी ही।

पुनिया श्रावक की सामायिक

'मैं शुद्धात्मा हूँ' ऐसा जिसे एक घंटे के लिए रहा वही सामायिक। समभाव से *निकाल* (निपटारा) करना वही सामायिक, रिलेटिव और रियल देखा वह भी सामायिक। अपने पाँच वाक्य (आज्ञाएँ) वे सामायिक स्वरूप ही हैं!

एक घंटे के लिए रिलेटिव और रियल दोनों देखते-देखते ठीक से उसका उपयोग रखा जाए, तो भगवानने उसे 'शुद्ध उपयोग' कहा है। वह शुद्ध उपयोग अगर एक गुणस्थानक तक रहे न, तो पुनिया श्रावक की सामायिक हो जाए। अगर आप कर सको तो अवश्य लाभ उठाना।

प्रश्नकर्ता : जिनकी सामायिक की भगवान महावीर ने भी प्रशंसा की, उसमें क्या रहस्य है, उसे ज़रा समझाइए।

दादाश्री : वह शुद्ध सामायिक थी। ऐसी सामायिक (करने का) सामर्थ्य ही नहीं है न मनुष्य में। (वह) शुद्ध सामायिक, जैसी मैंने आपको दी है, वैसी दिव्यचक्षुवाली सामायिक थी।

वे चाहे घर में रहें या बाहर घूमें तो भी उनकी शुद्ध सामायिक, दिव्यचक्षु के आधार पर उनकी सामायिक थी। वे रूई लेकर आते, फिर उसकी पूनी बनाकर उन्हें बेचते थे, इसलिए पुनिया श्रावक कहलाते थे। पूनियाँ कातते समय उनका जो मन था, वह तार में रहता था और चित्त भगवान में और इसके अलावा बाहर कुछ भी नहीं देखते थे, दखल करते ही नहीं थे। व्यवहार में मन रखते थे और निश्चय में चित्त रखते थे, ऐसा हो तो वह सब से उच्च प्रकार की सामायिक कहलाती है।

उस पुनिया श्रावक ने श्रेणिक राजा से कहा कि 'मैं सामायिक दूँगा।' तब श्रेणिक राजा ने कहा, 'कीमत क्या है? बता दे।' तब कहा, 'कीमत भगवान तय करेंगे, मैं कीमत तय नहीं कर सकता।' इसलिए श्रेणिक राजा को लगा कि भगवान दे-देकर पाँच करोड़ दिलवाएँगे, दस करोड़ दिलवाएँगे। एक सामायिक के कितने रुपये दिलवा देंगे? यानी उनके मन में उस बात का हिसाब ही नहीं था। आकर भगवान से कहने लगे कि 'पुनिया श्रावक ने देने के लिए कह दिया है। साहब, अब मेरा कुछ ऐसा निबेड़ा लाइए कि, अब नर्क में नहीं जाना पड़े।' तब (भगवान ने) कहा, 'लेकिन क्या पुनिया श्रावक ने यों ही दे देने के लिए कहा है? फ्री ऑफ कोस्ट (बिना मूल्य)?' तब कहने लगे, 'नहीं! भगवान जो कीमत लगाएँ, वह।' तब भगवान ने कहा, 'कितनी कीमत होगी श्रेणिक राजा, जानते हो? यह आपका राज्य उसकी कीमत की दलाली में जाएगा।' तो राजा तो घबरा गए कि मेरा राज्य दलाली में जाएगा, तो मैं बाकी का कहाँ से लाऊँगा? यानी इतनी कीमत थी उस सामायिक की।

दिव्यचक्षु के उपयोग से होती है शुद्ध सामायिक

वैसे मैंने आपको ये रिलेटिव और रियल वाक्य दिए हैं। वह अगर आप एक घंटे के लिए उपयोग करो सच्चे मन से और सच्चे चित्त से, तो मन से आगे देखते जाना है, ठोकर नहीं लगे उस तरह और चित्त से ये देखते रहना है, रिलेटिव और रियल, तो आपकी भी उसके जैसी ही सामायिक हो सकती है। लेकिन अब अगर आप करोगे तो आपका है।

इतनी कीमत है इस सामायिक की! इसलिए लाभ उठाना चाहिए। सामायिक करते समय अंदर समाधि अच्छी रहती है न? अब इसमें आसान है, कठिन नहीं है।

सामायिक अर्थात् क्या करना है? ये दो व्यू पोइन्ट दिए हैं न, तो सभी के अंदर शुद्धात्मा देखते-देखते सब्ज़ी लेने जाना है, तो कोई गधा हो या बैल जा रहा हो और कुछ जा रहा हो, जीवमात्र गाय, बकरी, (पेड़-पौधों को) आज्ञापूर्वक देखते-देखते जाना है और आज्ञापूर्वक वापस आना है। तो एक तो, अगर घरवालों ने कहा हो कि सब्ज़ी ले आओ, तो हम पैदल जाकर ले आए, पैसे खर्च नहीं हुए। और दूसरा फायदा क्या हुआ? तो, दादा की आज्ञा का पालन किया। तीसरा फायदा क्या हुआ कि सामायिक हो गई। चौथा फायदा क्या हुआ? तो सामायिक का फल समाधि रही। इसलिए इन सभी आज्ञाओं का पालन करना। ज़्यादा नहीं तो एक घंटा निकालना न। नहीं निकल सकता?

अब जब बाहर जाओगे तब दिव्यचक्षु का उपयोग करेंगे न? ऐसा है न, अनादि से अज्ञान परिचय है, इसलिए थोड़ा प्रेक्टिस करने के लिए दो-चार बार अभ्यास करेंगे न, तो बाद में शुरू हो जाएगा।

अभ्यास से बढ़ेगी जागृति

प्रश्नकर्ता : मनुष्य में तो पता चलता है कि

इसमें शुद्धात्मा है, लेकिन ये पेड़-पौधों को उस रूप में देखने की प्रेक्टिस हमारी समझ में नहीं आती।

दादाश्री : उसकी प्रेक्टिस हमें करनी पड़ेगी। अनादि से उल्टा अभ्यास है, वह उल्टा ही चलता रहता है। डॉक्टर ने कहा हो कि दाहिने हाथ से मत खाना, तो भी हमारा दाहिना हाथ ही बढ़ता है। खाने के लिए चार दिनों तक ज़रा जागृति रखनी पड़ेगी। उतना इसका अभी से अभ्यास कर लेना। दिव्यचक्षु से देखते-देखते जाना न। धीरे-धीरे सेट करते जाना है, तो फिट होता जाएगा। गाय-भैंस सभी में (शुद्धात्मा) है। शुद्धात्मा में चेन्ज नहीं हुआ है, यह पैकिंग चेन्ज (बदल गया) हुआ है। शुद्धात्मा तो वही है, सनातन है।

(आप) इन सभी में शुद्धात्मा देखते हो?

प्रश्नकर्ता : देखता हूँ लेकिन कभी-कभी विस्मृत हो जाता है।

दादाश्री : कभी-कभी विस्मृत हो जाए ऐसा नहीं, लेकिन कभी-कभी देखते तो हो न?

प्रश्नकर्ता : हाँ, देखता हूँ।

दादाश्री : यों देखने का अभ्यास करेंगे तो पूरे दिन समाधि रहेगी। एक घंटे के लिए ऐसे बाहर निकले हों, शुद्धात्मा देखते-देखते जाएँ, तो कोई क्या हमें डाँटेगा कि क्या देख रहे हो? इन आँखों से रिलेटिव दिखाई देगा, अंदर की आँखों से शुद्धात्मा दिखाई देगा। ये दिव्यचक्षु हैं। आप जहाँ देखोगे वहाँ (शुद्धात्मा) दिखाई देगा। लेकिन पहले उसका अभ्यास करना पड़ेगा, बाद में सहज हो जाएगा। फिर यों ही सहजता से दिखाई देगा। पहले का अभ्यास तो उल्टा था, इसलिए इसका अभ्यास करना पड़ेगा न? इसलिए कुछ दिन हैन्डल लगाना पड़ेगा।

उस पर विशेष रूप से ध्यान देना है। उसके लिए सभी पोइन्ट्स समझ लेने हैं। और कुछ समझना नहीं है। यह लिफ्ट मार्ग है, करना कुछ भी नहीं है। हमने कहा हो कि लिफ्ट में बैठकर लिफ्ट से हाथ बाहर मत निकालना, उतनी ही आज्ञा में रहना है। हमारी इन दो आज्ञाओं का पालन करोगे न, तो अंदर समाधि ही रहेगी और आत्मा की पुष्टि भी हो जाएगी।

जितना आज्ञा में रहा जाए, उतना अवश्य रहना ही चाहिए और नहीं रहा जाए तो अंदर थोड़ा बहुत खेद रखना चाहिए कि अंदर ऐसे कैसे कर्म के उदय लाए हैं कि आज हमें आराम से बैठने नहीं देते। दादा की आज्ञा में रहने के लिए कर्म के उदय का भी सहयोग होना चाहिए न? नहीं होना चाहिए क्या? वर्ना एकघंटे यों चलते-चलते, शुद्धात्मा देखते-देखते जाना है। चलते-फिरते पुनिया श्रावक की सामायिक हो गई।

प्रश्नकर्ता : (लेकिन अभी एक्ज़ेक्ट (जैसा है वैसा) शुद्धात्मा, वह अलग नहीं दिखाई देता।)

दादाश्री : जब तक हमने हमारा आत्मा नहीं देखा है, तब तक ज्ञानीपुरुष ही हमारे आत्मा हैं। यानी दादा भगवान ही आपके आत्मा हैं। यानी वे दादा वही हमारा स्वरूप हैं और वही दादा अंदर बैठे हुए हैं और ये जो दिखाई देते हैं न, वे सभी तो बॉक्स हैं, पैकिंग हैं सब।

इसलिए आपको अंदर दादा भगवान को बिठाना है। पहले कहना है कि चंदूभाई रिलेटिव है और मैं शुद्धात्मा हूँ। माइ शुद्धात्मा इज़ दादा भगवान। एक ही हैं दोनों। जब तक मैंने अपना शुद्धात्मा नहीं देखा है, तब तक दादा भगवान ही मेरे शुद्धात्मा हैं। यानी बाइ रिलेटिव व्यू पोइन्ट से चंदूभाई और रियल में शुद्धात्मा, दादा भगवान। दादा भगवान कहने की ज़रूरत नहीं है लेकिन अंदर दादा भगवान हैं, ऐसा

समझना है। रिलेटिव इज़ टेम्परेरी एडजस्टमेन्टस्, रियल इज़ परमानेन्ट।

अभ्यास के बाद होगी आज्ञा सहज

प्रश्नकर्ता : यों तो ज़्यादातर रियल-रिलेटिव रहता है लेकिन कई बार फिर चला जाता है, ऐसा होता रहता है।

दादाश्री : वह तो ऐसा है न, बहुत काल से उल्टा अभ्यास है इसलिए ऐसा होता रहता है। फिर ऐसे करते-करते हमारा अभ्यास मज़बूत हो जाएगा यानी सहज हो जाएगा। यह बाहर रिलेटिव और रियल देखने का अभ्यास करना पड़ेगा पहले। अभ्यासी बनने के बाद हो पाएगा।

प्रश्नकर्ता : आज्ञाएँ ध्यान में रहती हैं, लेकिन जिस सहज भाव से रहनी चाहिए वैसे नहीं रहतीं उसके लिए क्या करें?

दादाश्री : आपको उस पर ध्यान देने की ज़रूरत है, वर्ना सहज भाव से रहना कठिन नहीं है। सब से आसान चीज़ है, लेकिन आदत डालनी चाहिए। पहले उसका अभ्यास करना पड़ेगा। अन्अभ्यास है। अन्अभ्यास यानी हमें रियल और रिलेटिव देखने का अभ्यास ही नहीं है न। इसलिए एक महीना आप अभ्यास करोगे फिर सहज हो जाएगा। पहले हैन्डल मारना पड़ेगा। यह रियल और यह रिलेटिव, वह ज़्यादा जागृतिवाला हैन्डल नहीं मारेंगे तो चलेगा। लेकिन इन लोगों को इतनी ज़्यादा जागृति रहती नहीं है न? ज़्यादा जागृतिवाले को तो कुछ भी करना नहीं है, हैन्डल मारने की भी ज़रूरत नहीं है। यह सब तो सहज रहेगा ही।

उपयोग क्या? जागृति क्या?

प्रश्नकर्ता : उपयोग और जागृति, दोनों में क्या फर्क है? वह समझाइए।

दादाश्री : जागृति को किसी खास जगह पर केन्द्रित करना, वह उपयोग कहलाता है। जागृति किसी और में न चली जाए, जैसे कि संसार के फायदे-नुकसान में। एक ही जगह पर जागृति को केन्द्रित रखें, वह उपयोग! जहाँ जागृति बरते वह उपयोग, पर वह उपयोग शुभाशुभ का उपयोग कहलाता है। और शुद्ध उपयोग किसे कहा जाता है कि जो उपयोग शुद्धात्मा के लिए ही सेट किया हो। 'ज्ञानी पुरुष' की आज्ञा में उपयोग रहा, 'रियल'-'रिलेटिव' देखते-देखते चले तो समझना कि अंतिम दशा आ गई। यह तो रास्ते में बगलें झाँकता है कि 'स्टील ट्रेडिंग कंपनी, फलानी कंपनी, देखो यह कैसा है!' इस तरह से दूसरे उपयोग में रहे, वह अशुभ उपयोग कहलाता है और उपयोग धर्म के लिए हो तो अच्छा। और शुद्ध उपयोग की तो बात ही अलग है न!

शुद्ध उपयोग स्वतंत्र है। वह खुद की स्वतंत्रता है। जिससे जगत् विस्मृत रहता है, दिमाग़ पर बोझ नहीं रहता, शांति रहती है, 'रियल' और 'रिलेटिव' का अलग रहना, वह अपनी स्वतंत्रता है।

यह ज्ञान प्राप्त करने के बाद हमारी पाँच आज्ञाओं का पालन किया जाए तो, यहीं पर भगवान महावीर की तरह रहा जा सकता है। हम खुद भी रहते हैं न! जिस राह पर हम चले हैं वही राह आपको भी दिखा दी है और हमारे अंदर जो गुणस्थानक प्रकट हुआ है, वही गुणस्थानक आप में भी प्रकट हुआ है।

बस की राह देखते हुए भी शुद्ध उपयोग

जिसे यह ज्ञान मिला हो, उसे तो एक मिनट की भी फुरसत नहीं रही। मुझे एक मिनट भी फुरसत नहीं मिलती, एक सेकन्ड भी फुरसत नहीं न! बस के लिए खड़े हों और बस नहीं आ रही

हो तो लोग यों देखते रहते हैं। इधर देखते हैं, उधर देखते हैं और बेकार ही देखते रहते हैं। अगर आप वहाँ खड़े हैं, तो इधर-उधर देखने का क्या मतलब है? हमारे पास सारा ज्ञान है न! इसलिए जो भी खड़े हों, उनमें शुद्धात्मा 'देखना है।' जो आ-जा रहें हों, उनमें शुद्धात्मा 'देखना है।' बसें जा रही हों, उनमें जो लोग बैठे हों, उनमें शुद्धात्मा 'देखना है।' ऐसे करते-करते हमारी बस आ जाएगी। यानी सभी में शुद्धात्मा देखें और हम अपने शुद्धात्मा का ध्यान करते रहें तो हमारा टाइम व्यर्थ नहीं जाएगा। जबकि लोग तो इधर-उधर देखते रहते हैं। इधर देखते हैं, उधर देखते हैं और फिर अंदर ही अंदर बेचैन होते रहते हैं। बस नहीं आए तो बेचैनी होती है। तो हम अपना उपयोग क्यों बिगाड़ दें? और शुद्धात्मा देखते रहेंगे तो कितना आनंद होगा! अब हथियार प्राप्त हुआ है तो उपयोग करना चाहिए न? वर्ना हथियार पर ज़ंग लग जाएगा!

बस में बैठकर कहीं जा रहे हों, तो बस में क्या करते हो? क्या देखते रहते हो?

प्रश्नकर्ता : शुद्धात्मा देखना याद आता है लेकिन साथ-साथ यह भी है कि बस कैसे चला रहा है, कैसी बस है, ऐसा सब देखते हैं।

दादाश्री : यह क्लिनर ऐसा क्यों है? देखो, ये लोग ऐसे धक्का मार रहे हैं, लोगों को ऐसा कर रहे हैं। मानो सभी का सुपरवाइज़र बना रखा हो हमें! हम क्या करते होंगे?

हम तो उपयोग में ही रहते हैं, अन्य कोई झंझट ही नहीं न।

जागृति रखो उपयोग में रहने की

प्रश्नकर्ता : आप उपयोग कैसे रखते हैं?

दादाश्री : बाह्य रमणता ही नहीं न।

प्रश्नकर्ता : अंदर की स्व-रमणता आपकी कैसी होती है, दादा?

दादाश्री : वह तो वास्तविक ही होती है न! उसमें कहने जैसा कुछ है ही नहीं न! स्व-रमणता हुई नहीं है, लेकिन अगर ऐसी जागृति रहे कि स्व-रमणता करनी है, तो भी वह सेकन्डरी स्टेप है।

पूरे दिन आप उपयोग सेट करके रखो। अगर यहाँ से आपको कहा न कि आप जाओ। आप दस मिनट बाहर बैठो तो भी आपको अपनी वह जागृति जहाँ थी वहाँ से वापस सेट कर लेनी है। वहाँ से वापस शुरू हो जाएगी, वर्ना बेकार ही प्रयत्न करने पड़ेंगे।

प्रश्नकर्ता : ऐसा पूरे दिन रहता तो है, कि उपयोग में रहना है लेकिन उस ओर रहा नहीं जाता।

दादाश्री : रहा नहीं जाता वह बात अलग है, लेकिन लक्ष में रहता है, उतना भी अच्छा है न! मैं क्यों आया, ऐसा हुआ इसलिए तैयारी हो गई न। ट्रेन में बैठो तो ट्रेन के डिब्बे में जितने भी पैसन्जर हो, उनके शुद्धात्मा देखते रहो। वह निरा उपयोग ही कहलाता है। आज्ञा में रहना उपयोग कहलाता है। ऐसी जगह पर बैठना या खड़े रहना है ताकि हमें सारे पैसन्जर दिखाई दें। एक बार देख लिया तो फिर से सभी के शुद्धात्मा देखने हैं। अतः बार-बार ऐसा करते-करते एक घंटा बीत जाएगा। फिर उतरने का समय हो जाएगा। वह समय उपयोगपूर्वक गया।

अगर खुद ड्राइविंग कर रहे हों तो इस तरह लोगों में शुद्धात्मा नहीं देख पाएँगे, रियल-रिलेटिव नहीं देख पाएँगे। उस समय तो उसे खुद (गाड़ी चलाने में) ही ध्यान रखना चाहिए। लेकिन गाड़ी में बैठे हुए लोगों को उस उपयोग में रहना चाहिए न!

प्रश्नकर्ता : मैं गाड़ी चलाते हुए भी देख सकता हूँ।

दादाश्री : नहीं, शायद कमज़ोर पड़ जाएँ। वर्ना वास्तव में तो देख सकते हैं। अरे, कितने ड्राइवरों ने मुझे ऐसा कहा है कि, दादा, मैं तो देखता रहता हूँ। आगे खड्ढ़ा आया, फलाँ आया वह और यह फाइल नंबर एक ड्राइविंग करती रहती है। बहुत लोग अच्छी तरह शुद्ध उपयोग में रह सकते हैं।

शुद्ध उपयोग से बरते आनंद

प्रश्नकर्ता : यह शुद्ध उपयोग की जो बात है कि रास्ते में रिलेटिव-रियल देखते-देखते जाते हैं, वह फिर ज़्यादा देर के लिए चले तो फिर उसमें भी ऊब जाते हैं, फिर और कुछ चाहिए।

दादाश्री : ऊब जाते हैं तो भी हमें उसे जानना पड़ेगा न। उसे जानेंगे तो ऊब खत्म हो जाएगी।

प्रश्नकर्ता : हाँ, दादा। ऊब जाते हैं उसे जानते हैं, लेकिन यह शुद्ध उपयोग में रहने के बावजूद भी ऊब जाना, एक्चुअली (वास्तव में) ऐसा क्यों होता है?

दादाश्री : यह शुद्ध उपयोग वास्तविक शुद्ध उपयोग नहीं है। उसमें मन मिला रहता है, वर्ना ऊब क्यों जाएँगे? शुद्ध उपयोग में कैसे ऊब जाएँगे? जहाँ शुद्ध ही देखना है वहाँ! शुद्ध उपयोग का तरीका बदलने की ज़रूरत है फिर।

प्रश्नकर्ता : उपयोग में रहने से, आनंद उत्पन्न होना चाहिए। उस आनंद की वजह से नहीं उब जाएँगे।

दादाश्री : शुद्ध उपयोग उसे कहते हैं कि आनंद हो। जिससे ऊब जाएँ, वह शुद्ध उपयोग नहीं कहलाता। वहाँ रोक देना चाहिए कि (कुछ) भूल हो रही है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन आपने कहा कि उसमें मन आ जाता है इसलिए ऊब जाते हैं, तो शुद्ध उपयोग में रहते समय उसमें आ जाए तो क्या करना चाहिए?

दादाश्री : मन को देखते रहना है। मन को हमें जानना है कि, कौन सी स्थिति में है अभी मन!

पिछले कर्मों के सामने ज़रूरत जागृति की ही

प्रश्नकर्ता : दादा, आपकी जो पाँच आज्ञाएँ हैं, उनका पालन करना थोड़ा कठिन है या नहीं?

दादाश्री : कठिन इसलिए है कि हमारे जो पिछले कर्म हैं, वे परेशान करते रहते हैं। पिछले कर्मों के कारण आज खीर खाने को मिली। और खीर ज़्यादा खा ली तो उसके कारण डोज़िंग हो जाती है। इसलिए आज्ञा का पालन नहीं हो पाता। अब यह अक्रम है। क्रमिक मार्ग में क्या करते हैं कि सारे कर्मों को खत्म करते-करते खुद आगे बढ़ता है। कर्मों को खत्म करके, अनुभव करके और भोगकर फिर खुद आगे बढ़ता है जबकि यह बात कर्म खत्म किए बिना की है। इसलिए हमें ऐसा कहना है कि, 'भाई, आज्ञा में रहो, और न रह पाए तो चार जन्म देर होगी, उसमें नुकसान क्या है?'

निश्चय की कमी से रहती है अजागृति

प्रश्नकर्ता : आज्ञा सहज क्यों नहीं हो जाती?

दादाश्री : वह तो खुद की कमी है।

प्रश्नकर्ता : क्या कमी है?

दादाश्री : कमी उस जागृति की, उपयोग रखना पड़ेगा न थोड़ा बहुत?

एक व्यक्ति लेटे हुए विधि कर रहा था।

जागते हुए करने से पच्चीस मिनट लगते हैं, बैठे-बैठे। और सोते-सोते ढाई घंटे लग गए उसे, क्यों?

प्रश्नकर्ता : बीच में झोंका आ गया।

दादाश्री : नहीं, प्रमाद उत्पन्न होने से वह फिर भूल जाता है, कि कहाँ तक बोला। फिर वापस बोलता है। अपना विज्ञान इतना अच्छा है, कुछ दखल हो ऐसा नहीं है। थोड़ा बहुत रहता है?

प्रश्नकर्ता : हाँ, थोड़ा बहुत रहता है लेकिन पूर्णत: आज्ञा का पालन करना इतना आसान नहीं है न! वह (आलस/प्रमाद) खींच ले जाता है मन को।

दादाश्री : रास्ते पर चलते-चलते शुद्धात्मा देखते जाएँ तो, उसमें क्या कठिनाई है? डॉक्टर ने कहा हो कि आज दाएँ हाथ से खाना मत खाना, आठ-दस दिनों तक। उसे याद रखना है। उतना ही काम है न? यानी थोड़ी जागृति रखनी है। उतना ही काम है न? जागृति नहीं रहती इसलिए वह हाथ उस ओर चला जाता है। अनादि से उल्टा अभ्यास है न।

ये पाँच वाक्य (आज्ञाएँ) तो बहुत भारी वाक्य हैं। ये वाक्य समझने के लिए बेसिक (नींव) हैं लेकिन बेसिक बहुत भारी है। वे धीरे-धीरे समझ में आते जाएँगे। यों दिखते हैं हल्के, हैं भी आसान लेकिन दूसरे अंतराय बहुत सारे हैं न, मन में विचार चल रहे हों, अंदर परेशानी हो, धुआँ उड़ रहा हो, तो वह रिलेटिव और रियल को अलग कैसे देख सकेगा?

आज्ञा सेट करके रहो उपयोग में

आप रियल और रिलेटिव देखते-देखते जाओ, तो आपका चित्त कहीं और नहीं जाएगा। अगर आप घर में से बाहर निकलो तब शुद्ध उपयोग रखते हो, अर्थात् रियल और रिलेटिव सब देखते-देखते आगे जाते हो, उस समय शुद्ध उपयोग रहता है। यहाँ किसी के साथ बातचीत करने लगो, उस घड़ी बातचीत करते रहो और शुद्ध उपयोग अंदर रखते रहो। बातचीत करे, वह चंदूलाल करते हैं और 'आप' यह सब देखते रहो। उस प्रकार से उपयोग रह सकता है। वह कोई बहुत मुश्किल नहीं है। लेकिन तब अगर मन में से कुछ आया हो तो आप उलझ जाते हो।

रिलेटिव और रियल, वह देखते समय यह आगे-पीछे का जो विचार आता हो तो, 'व्यवस्थित' कहकर बंद कर दो। देखते समय आगे का विचार उसे परेशान करे, तो हम 'व्यवस्थित' कहें तो बंद हो जाता है। इसलिए फिर वापस देखने का हमारा शुरू रहेगा। उस समय कोई फाइल परेशान कर रही हो तो समभाव से *निकाल* कर के भी अपना शुरू रहेगा।

सिर्फ समझ लेने की ज़रूरत है

प्रश्नकर्ता : आप कहते हैं न कि हमें, एक-एक जीव में शुद्धात्मा दिखाई देता है? तो वह एक्ज़ेक्ट दृष्टि कैसी होती है।

दादाश्री : हमारी बात अलग है और आपकी बात अलग है। वह बताया नहीं जा सकता। आपको मतलब निकालना है कि यह ऐसा क्यों नहीं है? कि बुद्धि से समझ में आ सके?

प्रश्नकर्ता : वह समझ में आता है।

दादाश्री : सभी बुद्धिवाले कबूल करते हैं कि यह ऐसा है कि समझ में आ सके, फिर क्या हर्ज है? आँखों का आँखों से दिखना, बुद्धि से दिखना चाहिए तो सच्ची श्रद्धा बैठेगी। लोगों से कहेंगे कि, 'तू यहाँ अच्छा काम कर तो पुण्य बँधेगा।' तो क्या वह उसे दिखाई देता है?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : बुद्धि से बताया हुआ सभी एक्सेप्ट (स्वीकार) करते हैं। तेरा क्यों ऐसा हो गया है?

प्रश्नकर्ता : नहीं, वह तो इसलिए कि और अधिक जानने को मिले, दृष्टि मिले।

दादाश्री : ठीक है। फिर आँखों से पाँच इन्द्रियों का पुतला दिखाई देता है। बुद्धि से उससे भी ज़्यादा दिखाई देता है।

प्रश्नकर्ता : ठीक है, और ज्ञान से संपूर्ण दिखाई देता है?

दादाश्री : वह तो ऐसी बात है कि सहज ही समझ में आ जाएगा। सामनेवाले को संतोष नहीं होता, लेकिन उस बात का संतोष होता है न? किसी से अच्छा काम करने को कहे और कहें कि उससे पुण्य बँधेगा, तो तुरंत वह उसे खुद को समझ में आता है न? बुद्धि से समझ में नहीं आता क्या?

प्रश्नकर्ता : समझ में आता है।

दादाश्री : और यों ही उनसे ऐसा कहें कि 'भाई, सभी में भगवान हैं।' तो बुद्धि उसे एक्सेप्ट नहीं करेगी। बुद्धि को उसे एक्सेप्ट करना चाहिए। बुद्धि एक्सेप्ट न करे तो उसका अर्थ नहीं है, वह मीनिंगलेस (अर्थहीन) है। ऐसा कहने से कोई सभी में भगवान देख नहीं सकता। लेकिन यह बात ठीक है ऐसा बिल्कुल न बोले, उससे तो अच्छा है और वास्तव में तो है ही न भगवान! उसमें बात गलत तो नहीं है! लेकिन जब तक बुद्धि एक्सेप्ट न करे तब तक जैसा चाहें वैसा फल नहीं मिलेगा। यह तो हमारी ज्ञानविधि के बाद रोंग बिलीफ फ्रेक्चर हो जाती है, राइट बिलीफ बैठ जाती है इसलिए फिर मैं कहता हूँ कि 'सभी में भगवान हैं, सभी में भगवान देखना।' बाद में बुद्धि एक्सेप्ट करती है। और बुद्धि के एक्सेप्ट करने के बाद ही फल मिलता है।

आपको मैंने सिखाया कि रियल व्यू पोइन्ट से आप ऐसे हो और यह सब, इसलिए आपको साधारण दृष्टि मिल गई। उसे देखते रहना है। या फिर ज्ञान आँखों से देखा हुआ होना चाहिए, या फिर बुद्धि से दिखना चाहिए। यों ही श्रद्धा रखने का अर्थ ही नहीं है न।

वह रिलेटिव-रियल.. रियल देखने की स्टडी (अभ्यास) जारी ही है। यह सब से अच्छा है। हम बुद्धि से यह भी समझ गए कि यह रिलेटिव है और यह रियल है। समझ लेने के बाद तो हमें वापस गलती नहीं करनी चाहिए।

भगवान के दर्शन यों करने हैं

प्रश्नकर्ता : मेरे जैसे ने ज्ञान लिया है, तो अब जब मंदिर में जाएँ तो क्या करना चाहिए?

दादाश्री : अब 'चंदूलाल' से ही कहना है कि 'अगर अंदर भाव हो रहा है तो नमस्कार करो और अगर नहीं हो रहा तो कोई बात नहीं।' लेकिन उसके प्रति घृणा नहीं रहनी चाहिए, अभाव नहीं रहना चाहिए। वह रिलेटिव (व्यवहार) है। रिलेटिव में हर्ज नहीं है। रिलेटिव में मस्जिद में जाएँ तो भी दर्शन कर सकते हैं।

यानी रिलेटिव में निष्पक्षपाती और रियल (निश्चय) में सिर्फ यह शुद्धात्मा। रियल भक्ति एक ही है।

मंदिर या जिनालय में जाकर भगवान के सच्चे दर्शन करने की इच्छा हो तो मैं आपको दर्शन करने का सही तरीका सिखलाऊँ। बोलो, है किसी को इच्छा?

प्रश्नकर्ता : हाँ, है। सिखलाइए दादा। कल से ही उस अनुसार दर्शन करने जाएँगे।

दादाश्री : भगवान के मंदिर में जाकर कहना कि, ''हे वीतराग भगवान! आप मेरे भीतर ही विराजे हैं, लेकिन मुझे उसकी पहचान नहीं हुई, इसलिए आपके दर्शन करता हूँ। मुझे यह 'ज्ञानीपुरुष' दादा भगवान ने सिखलाया है, इसलिए उस अनुसार आपके दर्शन करता हूँ। तो मुझे मेरे 'खुद की' पहचान हो, ऐसी आप कृपा कीजिए।'' जहाँ जाओ वहाँ इस अनुसार दर्शन करना। ये तो अलग-अलग नाम दिए हैं। सभी भगवान 'रिलेटिवली' अलग-अलग हैं, लेकिन 'रियली' एक ही है।

नियम से ही हर एक वस्तु के दो विभाग होते हैं, 'रिलेटिव' और 'रियल।' (कृष्ण भगवान के) फोटो के दर्शन करने से 'रिलेटिव' की चिट्ठी तो कृष्ण भगवान को पहुँचती है और 'रियल' में अपने आत्मा की ही भक्ति होती है।

कृष्ण भगवान के फोटो के दर्शन करते हैं तो वह 'रिलेटिव' को पहुँचता है। 'यहाँ' पैर छूएँ, तो 'डाइरेक्ट' वह उनके आत्मा को ही पहुँचता है। क्योंकि वीतराग स्वीकार नहीं करते हैं न? हमेशा 'रिलेटिव' और 'रियल' दोनों दर्शन हों, वहीं मोक्ष है।

पूरा जगत्, क्रमिक मार्ग होने के कारण नीचेवाले (निम्न) को नमस्कार नहीं करता और सिर्फ उपरवाले (उच्च) को नमस्कार करता है ऐसा उनका स्वभाव है जबकि अपना अक्रम निम्न-उच्च सभी पदों को नमस्कार करता है। इस जगत् में एक भी ऐसा जीव बाकी नहीं रहा, अपने 'अक्रम' मार्गवाला जिसका दर्शन न करता हो। क्योंकि क्रमिक मार्ग क्या कहता है? अरे! नरक के जीवों को नमस्कार नहीं करना चाहिए, तिर्यंच के जीवों को नमस्कार नहीं करना चाहिए, भुवनवासी, व्यंतर देवों को नमस्कार नहीं करना चाहिए। उन सभी को तो पर्याय दृष्टि से देखते हैं!

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : और हम तो कहते हैं कि हम तीर्थंकरों को, व्यंतर देवों को, भुवनवासी को, सभी को नमस्कार करते हैं, हम रियल दृष्टि से देखते हैं।

प्रश्नकर्ता : रियल दृष्टि से?

दादाश्री : हाँ, रियल दृष्टि, इसलिए हमारा जीवमात्र के साथ किसी भी प्रकार का झगड़ा नहीं है और इस कारण यह ज्ञान प्रकट हुआ है।

विनाशी व्यवहार को जाननेवाले आप अविनाशी

प्रश्नकर्ता : जब-जब हम अपने व्यवहार में और वर्तन में आते हैं तब, 'मैं शुद्धात्मा हूँ' या 'चंदूभाई हूँ', उसका कुछ भी पता नहीं चलता।

दादाश्री : उसे समझ लेने की ज़रूरत है। 'आप' चंदूभाई भी हो और 'आप' 'शुद्धात्मा' भी हो! बाय रिलेटिव व्यू पोइन्ट से आप 'चंदूभाई' और बाय रियल व्यू पोइन्ट से आप 'शुद्धात्मा' हो! रिलेटिव सारा विनाशी है। विनाशी भाग में आप चंदूभाई हो! विनाशी व्यवहार सारा चंदूभाई का है और अविनाशी आपका है! अब 'ज्ञान' के बाद अविनाशी में आपकी जागृति रहती है।

समझने में ज़रा कमी रह जाए तो कभी किसी से ऐसी भूल हो जाती है। सभी से नहीं होती।

आप सिर्फ चंदूभाई ही नहीं हो। किसी जगह पर आप सर्विस करें, तो आप उसके नौकर हो। तब आपको नौकर के सभी फर्ज़ पूरे करने हैं। कोई कहीं हमेशा के लिए नौकर नहीं है।

इसलिए आप अमुक अपेक्षा से चंदूभाई हो और अमुक अपेक्षा से सेठ भी हो। अमुक अपेक्षा से इनके ससुर भी हो। लेकिन आप अपनी 'लिमिट' (मर्यादा) जानते हो या नहीं जानते कि 'किन-किन अपेक्षाओं से मैं ससुर हूँ?' वह पीछे पड़ जाए कि 'आप हमेशा के लिए इनके ससुर हो', तब आप कहेंगे, 'नहीं भई, हमेशा के लिए कोई ससुर होता होगा?'

'मेरा नहीं है' कहकर निराकुलता में रहना है

आप तो 'शुद्धात्मा' हो और 'चंदूभाई' तो *वळगण* (बंधन) है। लेकिन यह अध्यास अनादिकाल से है, इसलिए हर बार उसी ओर खींच ले जाता है। डॉक्टर ने कहा हो कि दाएँ हाथ का उपयोग मत करना, फिर भी दायाँ हाथ थाली में डाल देता है। लेकिन 'यह' जागृति ऐसी है कि तुरंत ही पता चल जाता है कि यह भूल हुई। आत्मा ही जागृति है। आत्मा ही ज्ञान है। लेकिन पहले की अजागृति आती है, इसलिए कुछ समय तक अजागृति की मार खाता है।

कोई भी भाव हमारे भीतर उत्पन्न हो और उसका बवंडर उठे तो वहीं से छोड़ देना सबकुछ। बवंडर उठा कि तुरंत ही ऐसा पता चल जाता है कि सबकुछ उल्टे रास्ते पर है। जहाँ थे वहाँ से 'मैं शुद्धात्मा हूँ' करके भाग जाना। निराकुलता में से थोड़ी भी व्याकुलता उत्पन्न हुई कि 'यह हमारा स्थान नहीं है' करके भाग जाना।

प्रश्नकर्ता : यहीं पर मुझसे भूल हो जाती है। जब आकुलता-व्याकुलता होती है तब मैं भाग नहीं जाता, बल्कि सामने बैठा रहता हूँ।

दादाश्री : अभी बैठने जैसा नहीं है। आगे जाकर बैठना। अभी तक पूरी तरह शक्ति नहीं आई है, शक्ति आए बिना बैठोगे तो मार खाओगे। 'अपना' तो निराकुलता का प्रदेश! जहाँ पर कोई भी आकुलता-व्याकुलता है, वहाँ पर कर्म बंधेंगे। निराकुलता से कर्म नहीं बंधेगे। व्याकुल होकर इस संसार का कोई भी फायदा नहीं होगा और जो होगा वह तो 'व्यवस्थित' है, इसलिए निराकुलता में रहना चाहिए। जब तक शुद्ध उपयोग रहेगा, तब तक निराकुलता रहेगी।

पहचानो स्व-पर के स्वभाव को

जिस कुर्सी पर तुम बैठने से कोई दुःख न हो तब समझना कि यह कुर्सी अपनी है। वेदनावाले भाग पर कोई बैठेगा ही नहीं न! किसी कुर्सी पर ज़रा सा जल जाते हैं, किसी कुर्सी पर ज़्यादा जल जाते हैं, किसी कुर्सी पर शॉक लगता है। वहाँ से जल्दी उठ जाना है। भीतर वैसी चार-पाँच कुर्सियाँ हैं। ऐसा उसे समझाया। फिर वापस बैठता भी था लेकिन फिर से उठा देता। अब तुझे पता चलता है कि इस कुर्सी पर गलती से बैठ गया हूँ?

प्रश्नकर्ता : दादा, पता तो चलता ही है।

दादाश्री : जब तक पता चलता है तब तक अभी भी बदलने की आशा है। वह पता ही न चले, तो फिर उसका क्या उपाय? अभी आप जो बातें करो वह मुझे सुनाई न दें, तो फिर मुझे उससे क्या लेना-देना? मुझे क्या फायदा?

अगर हम रिलेटिव पर बैठें, तो क्या तुरंत पता नहीं चलेगा कि शॉक लग रहा है? इसलिए उठकर वहाँ शुद्धात्मा की कुर्सी पर बैठ जाना चाहिए। तो स्वभाव को पहचान लो। शॉक लगे वहीं पर बैठे रहें और फिर शोर मचाएँ, 'दादा, मुझे भीतर दुःख हो रहा है..' 'अरे, भाई! तू उठ न यहाँ से, वहाँ तेरी कुर्सी पर बैठ न। तुझ में रिलेटिव और

रियल के विभाग कर दिए हैं कि यह कुर्सी तेरी और यह उसकी।'

प्रश्नकर्ता : रिलेटिव कुर्सी पर उतना मज़बूत शॉक नहीं लगता इसलिए पता नहीं चलता। उसी पर बैठे रहते हैं।

दादाश्री : हाँ, लेकिन वह अच्छा लगता है, मीठा लगता है, लेकिन थोड़ी सी जीभ भी कट जाती है। यानी तलवार की धार पर रखा शहद, मीठा लगता है और जीभ कटती रहती है। बीच-बीच में जलन होती है, दोनों साथ-साथ चलता रहता है।

प्रश्नकर्ता : दादा, रिलेटिव कुर्सी पर जब कभी झटका लगता है तब तुरंत उठ जाते हैं और दादा याद आ जाते हैं।

दादाश्री : हाँ, लेकिन ऐसा हो जाता है। ऐसे थोड़ा बहुत उठ गए हो न! उठने का भाव तो हुआ न! लेकिन जो इस स्वभाव को पहचान लेता है, वह तुरंत उठ जाता है कि यह नहीं चाहिए, यह नहीं चाहिए, यह गलती हो गई। अगर हम इलेक्ट्रिक वायर को हाथ लगाएँ और शॉक लगे, तो फिर हम क्या कहेंगे कि 'देखना, उसे मत छूना।' उसी तरह यहाँ भी इसे सावधान करते रहना है, बिवेअर। उस चार सौ वोल्टवाले में तो मृत्यु हो जाती है लेकिन इसमें तो अनंत जन्मों की मृत्यु हो जाती है, भाई! इसलिए बड़ा बोर्ड लगाकर रखो। आत्मा प्राप्त हो गया हो तो (कह सकते हैं), वर्ना बाहर तो किसी को कुछ भी नहीं कह सकते। आपको रिलेटिव और रियल दोनों कुर्सियों का पता चल गया है इसलिए कह सकते हैं। बाहर बात करने से कोई फायदा नहीं है।

स्वरूप में रहे उसका सबूत क्या?

प्रश्नकर्ता : वैसे तो जिसे उपयोग नहीं रहता वह स्वरूप से बाहर ही कहलाएगा न?

दादाश्री : कोई भी रिलेटिव चीज़ आने पर ऐसा कहे कि यह 'मेरी नहीं है,' तो वह 'स्वरूप' में है। तब यहाँ स्वरूप में बैठकर बोल सकता है, वर्ना नहीं बोल सकता। अगर बाहर खड़ा है तो नहीं बोल सकता। 'यह मेरा नहीं है' कहा यानी स्वरूप में है। अगर शुद्ध है तो फिर कुछ बचा क्या?

प्रश्नकर्ता : लेकिन सभी संयोगों में 'मेरा नहीं है' ऐसा नहीं रहता, दादा।

दादाश्री : वह 'तेरा है' ऐसा लगता है तुझे?

प्रश्नकर्ता : ऐसा कोई भाव नहीं रहता कि यह मेरा है या नहीं।

दादाश्री : यानी उपयोगपूर्वक नहीं रहता। यों तो रहता है, लेकिन उपयोगपूर्वक रहना चाहिए कि 'मेरा नहीं है।' हम 'मेरा नहीं है,' बोलें तो अंदर दूसरे सब जो बैठे हैं वे सुनेंगे और कहेंगे, ओहोहो! हमारे साथ साफ बात ही कर रहा है अब। बुद्धि, मन और चित्त को भरोसा हो जाता है कि अब ये 'उस' पक्ष के हो गए हैं, अब अपनी नहीं चलेगी।

प्रश्नकर्ता : शुरुआत की अवस्थाओं में बोलना है, फिर तो परमानेन्ट वैसा हो जाएगा न? इसलिए अभी बोलते रहना है?

दादाश्री : लेकिन अभी ही शुरुआत तो हुई है न! कहने में क्या हर्ज है, 'मेरा नहीं है?' बस धीरे से मन में, ज़ोर से नहीं बोलना है! मन में बोलना है कि 'मेरा नहीं है।' तिजोरी के आसपास जो पुलिसवाले होते हैं, वे रात को बारह बजने पर बारह बजे के घंटे बजाते हैं। एक बजे हो तो एक का घंटा बजाते हैं और फिर हर घंटे में बोलते हैं, 'अल बेल ..अल..बेल' ऐसा बोलते हैं। इसलिए वह सारे पुलिसवाले सुनते हैं, सभी आराम से सो जाते हैं। 'अल बेल' मतलब क्या कहते हैं? 'अल

बेल' अर्थात् 'ऑल वेल।' अब इतना बोलता है तो दूसरे तो फिर आराम से सो जाएँगे न? न बोले, तो फिर शंका होती है कि साढ़े बारह बज गए तो भी अभी तक क्यों नहीं बोला! डंके की चोट पर बोलना है। उसी तरह हमें यह बोलना है। बोलने से साबित होता है कि खुद स्वरूप में है, जागृतिपूर्वक है और 'मेरा नहीं है' कह रहा है।

स्वरूप में रहे उसका सबूत क्या? यदि कोई पत्थर मारे, उस घड़ी उसे तुरंत ही ऐसा लगता है कि यह 'मेरा स्वरूप नहीं है।' यानी खुद स्वरूप में बैठकर ऐसा बोलता है। चाहे कैसा भी रिलेटिव आए तो 'मेरा स्वरूप नहीं है' बोला कि छूट गया।

प्रश्नकर्ता : कई बार जागृति रहती है कि यह 'मेरा स्वरूप नहीं है', सहज ही रहती है। कई बार जागृति नहीं रहती और एकाकार हो जाते हैं उस रिलेटिव चीज़ में।

दादाश्री : हाँ, तो ऐसा कहो न! 'मेरा स्वरूप नहीं है' ऐसा कहने का अभ्यास करने से जागृति आ जाएगी। ऐसा अभ्यास करना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : कई बार जब कोई रिलेटिव चीज़ या संयोग नहीं हों, तब ऐसा लगता है कि मैं स्वरूप में हूँ।

दादाश्री : हाँ, ठीक है। उसमें हर्ज नहीं है। संयोग आएँ तभी इधर उधर हो जाना संभव है। तो संयोग से हमें कह देना है कि 'मेरा स्वरूप नहीं है।'

संयोग को देखनेवाला ज्ञायक स्वरूप में

प्रश्नकर्ता : जब संयोग नहीं होते, तब क्या हम स्वरूप में होते हैं?

दादाश्री : संयोग नहीं हों का मतलब यह कि, वह बात को समझा नहीं है। उस घड़ी मन भी नहीं होता क्या? लेकिन अगर मन विचार कर रहा हो, तो वह भी संयोग कहलाता है और फिर भी आप ज्ञायक स्वरूप में ही हो। भटकनेवालें चित्त को आप देखते रहो, उस घड़ी आप स्वरूप में ही हो। जैसे कि हमारी गाय हो, वह इस तरफ भागे, उस तरफ भागे, तो उसे भी आप देखते ही रहो, तब भी आप स्वरूप में ही हो। चित्त का स्वभाव भटकने का है लेकिन उसके साथ तन्मयाकार हो गए, तो वह बिगड़ जाएगा। कभी तन्मयाकार हुए हो?

प्रश्नकर्ता : हुआ हूँ, अभी तक तन्मयाकार ही था।

दादाश्री : उसे तन्मयाकार कहते हैं, तदाकार कहते हैं। वह जैसा है, उसी आकार का यह भी बन जाता है।

प्रश्नकर्ता : दादा, कई बार एकाध मिनट के लिए तन्मयाकार रहते हैं और दूसरे मिनट में ही जागृति आ जाती है कि ये विचार मेरे नहीं हैं।

दादाश्री : तो हर्ज नहीं है। फिर दूसरें मिनट में बोलें, तो भी हर्ज नहीं है।

'मेरा नहीं है' कहा कि अलग

प्रश्नकर्ता : संपूर्ण निडरता नहीं आ पाती। निर्लेपता नहीं है इसलिए उतनी निडरता नहीं है, कुछ कम है।

दादाश्री : बाहर चाहे कितना भी देखें लेकिन अंदर हमें असर न हो, तो उसे निर्लेपता कहते हैं। क्योंकि हम शुद्धात्मा, शुद्धात्मा को किसी भी प्रकार का असर नहीं होता। क्योंकि वह इफेक्टिव नहीं है। लेकिन ऐसे इफेक्ट हो जाता है न, वहाँ पर आपकी जागृति थोड़ी कम पड़ जाती है। वहाँ आपको ऐसा कहना चाहिए कि, 'चंदूभाई, आप क्यों अपने सिर पर ले रहे हो या आपको इससे क्या लेना-देना?'

વર્તમાન તીર્થંકર શ્રી સીમંધર સ્વામી

अंजार त्रिमंदिर प्राणप्रतिष्ठा महोत्सव : दि. 6 मार्च 2016

प्रतिष्ठा विधि करते हुए पूज्यश्री

श्री सीमंधर स्वामी

श्री कृष्ण भगवान

श्री शिव भगवान

दादा-नीरू माँ के आशीर्वाद लेते हुए पूज्यश्री

ज्ञान दिन पर महात्माओं के आशीर्वाद लेते हुए पूज्यश्री

चांद्राणन यक्षदेव

पांचांगुली यक्षिणीदेवी

दादा-नीरु माँ

आशापुरा माता जी

ऋषभदेव भगवान

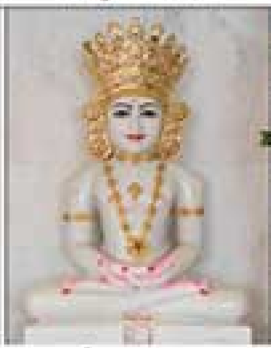
अजितनाथ भगवान

पार्श्वनाथ भगवान

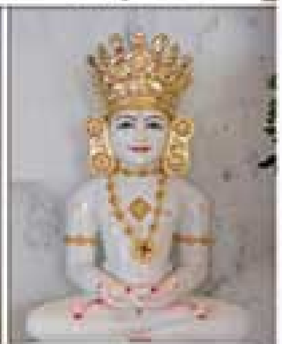
महावीर भगवान

भद्रकाली माता जी

चक्रेश्वरी देवी

अंबा माता जी

पद्मावती माता जी

हनुमान जी

गणपती जी

पद्मनाभ प्रभु

साँईबाबा

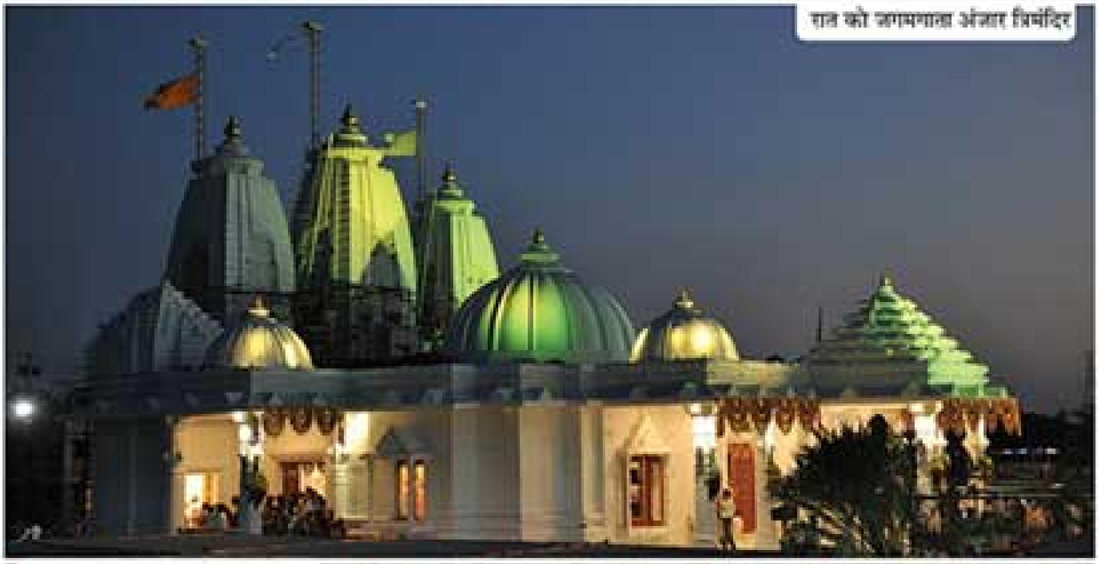

रात को जगमगाता अंजार त्रिमंदिर

हज़ारों महात्माओं की भीड़ उमड़ पड़ी

खुले त्रिमंदिर के मंगलद्वार

दि. 7 मार्च 2016

अंजार : सत्संग-ज्ञानविधि : दि. 4-5 मार्च 2016

बस, उतना कह देना चाहिए। तो अलग हो जाएगा। उतनी 'जागृति' हमें रखनी चाहिए। या फिर और कुछ करना न आए तो 'मेरा स्वरूप नहीं' ऐसा कहकर अलग हो जाना है।

प्रश्नकर्ता : दादा, वैसा ज्ञान तो हाज़िर रहता है फिर। मैं इसमें कहाँ पड़ गया, यह रिलेटिव है।

दादाश्री : फिर भी हो जाता है। हो गया न इसलिए रिलेटिव कहने के बजाय 'मेरा स्वरूप नहीं है' कहते ही सब अलग। हमने क्या कहा है कि यह तेरा स्वरूप है और यह नहीं है। इसलिए अब आप यह 'मेरा नहीं है' कहोगे तो अलग। फिर तो उसमें एकाकार होओगे ही नहीं।

प्रश्नकर्ता : जितनी चीज़ों में तन्मयता उतना कच्चापन ही है न?

दादाश्री : हाँ, वही तो। यानी अब तन्मयता होने का और कोई कारण नहीं है सिर्फ जागृति मंद पड़ जाती है। जागृति मंद क्यों है? तो पहले के अभ्यास के कारण। इसलिए अगर हम इसमें थोड़ी ज़्यादा जागृति रखेंगे तो तुरंत शांत पड़ जाएगा, अलग हो जाएगा। मेरी तबियत तो चाहे कितनी भी खराब हो, तब अगर मुझसे कहते हैं कि आज तो दादा, आपकी तबियत वीक (कमज़ोर) है। तो हम कहते हैं 'मुझे कुछ नहीं हुआ है, क्या होना है?'

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : कितने ही शहरों में घूमता हूँ लेकिन कुछ नहीं होता। क्या होना है? हम कहें कि, 'मुझे हुआ' तो चिपकेगा।

लालच से चूक जाते हैं शुद्ध उपयोग

प्रश्नकर्ता : दादा, तो फिर आपने जिन्हें ज्ञान दिया है, उन महात्माओं की भी वही दशा है?

दादाश्री : वही दशा है। लेकिन महात्माओं के पास बचा हुआ सामान बहुत है न, उसका *निकाल* तो करना पड़ेगा न? तभी होगा न। मेरे पास बचा हुआ सामान नहीं है इसलिए चल रहा है। बचा हुआ सामान तो ऊपर रखना ही पड़ेगा न!

प्रश्नकर्ता : वह रिलेटिव में ठीक है।

दादाश्री : हाँ, लेकिन रिलेटिव के बचे हुए सामान का निकाल करने में उपयोग चूक जाते हैं। तब तक सबकुछ चूक जाते हैं। अब उपयोग यानी क्या कि आप व्यापार के काम में हों, उपयोगपूर्वक व्यापार के विचार में ही हो और उस समय ऐसा कोई व्यक्ति आ मिले, जो आपको ललचा दे, आपके मन को ललचा दे ऐसा, तो वहाँ आपका उपयोग बदल जाता है। वह उपयोग इच्छानुसार नहीं रहता। उसी तरह यह आत्मा का शुद्ध उपयोग निरंतर नहीं रहता। ऐसा कुछ कर्म का उदय आ जाए तो फिर हट जाता है।

प्रश्नकर्ता : ज्ञानी के अलावा और किसी में निरंतर नहीं रह सकता।

दादाश्री : नहीं, आप भी ज्ञानी ही हो। लेकिन जब तक यह माल भरा हुआ है तब तक आपकी लिमिट है, अन्लिमिटेड नहीं है। अतः आप ज्ञानी ही हो, आपको मानना है ज्ञानी, लेकिन कहना नहीं है कि 'ज्ञानी हूँ मैं।' वर्ना पूछने आएँगे और रोज़ दस लोग आकर आपके पास बैठेंगे। इसका मतलब क्या, उसका मतलब क्या, तो फिर परेशानी हो जाएगी! और मैं कहूँ कि ज्ञानी हूँ, तो मुझे कोई परेशानी नहीं होगी।

प्रश्नकर्ता : उसमें उपयोग कैसे चूक जाते हैं?

दादाश्री : ऐसा धीरे-धीरे निरंतर होता रहेगा।

यह रोड पर वाहन आते-जाते हैं, वे हमारा उपयोग चूकवा देते हैं और जब उसका माल खत्म हो जाएगा, तो फिर जो कुछ सामने है, वह दिखता रहेगा।

अब काम निकाल लेना है सारा। इसमें ज़्यादा कुछ है भी नहीं। यह डिपार्टमेन्ट उसका है और यह डिपार्टमेन्ट अपना है। उनके डिविज़न करने के बाद अगर फिर से उलझन में पड़ जाओ तो, पूछ लेने की ज़रूरत है कि 'भाई, यह क्या है? यह हमें ऐसा क्यों रहता है?' तो फिर हम बता देंगे कि भाई, 'यह तो रिलेटिव है, यह तेरा नहीं है।' ऐसा समझाएँगे तो फिर समाधान हो जाएगा। वापस दूसरे दिन कुछ नया खड़ा होगा। फिर हम कहेंगे कि 'भाई, यह रिलेटिव इस तरह से है और इस तरह से यह रियल है।' ऐसा उसकी बुद्धि को समझाना पड़ेगा न? उसकी (समझ में) आना चाहिए न?

जहाँ अनइज़ी लगा वहाँ नुकसान

प्रश्नकर्ता : रियल और रिलेटिव जानने के बाद व्यवहार में कैसे रहना चाहिए?

दादाश्री : जिस तरह रह सको उस तरह से रहना है लेकिन इज़ीली। अनझज़ी नहीं होना है व्यवहार में। व्यवहार अनइज़ी हो जाए तो वह अपनी गलती है। व्यवहार इज़ीली होना चाहिए और यह जगत् के लोग तो इज़ी चेयर पर बैठकर अनइज़ी होते हैं। इज़ी चेयर पर बैठने के बावजूद भी अनइज़ी दिखाई देते हैं। ऐसा होता है?

प्रश्नकर्ता : ऐसा ही होता है।

दादाश्री : चेयर इज़ी लाया भाई। चेयर के संग का भी उस पर असर नहीं हुआ। यानी जितना अनइज़ीपना होगा उतना ही नुकसान है। अनइज़ी हमेशा नुकसान ही करवाता है।

राग-द्वेष रहित वह व्यवहार

प्रश्नकर्ता : रियल दिखे तो फिर उसका व्यवहार रहा ही कहाँ?

दादाश्री : व्यवहार तो रहा ही न! व्यवहार तो है ही। जब तक देह है तब तक क्या संडास नहीं जाएगा? संडास जाना वह व्यवहार, युरिनल में जाना वह व्यवहार है, खाँसना व्यवहार है, फिर क्या खाना नहीं खाना पड़ेगा? सोना नहीं पड़ेगा? सब व्यवहार बचा है। अभी अज्ञान दशा का जितना भी व्यवहार है उतना सारा व्यवहार बचा है। व्यापार करना पड़ेगा, दुकान पर बैठना पड़ेगा। लेकिन पहले अगर कोई गाली दे न तो वह सामने पाँच गालियाँ देकर आता था और अब सुनकर आ जाता है।

प्रश्नकर्ता : मुझे एक भाई से एक लाख रुपए लेने हों और मैं उस भाई को रियल स्वरूप से देखूँ, तो फिर क्या मुझे उससे एक लाख रुपए माँगने चाहिए?

दादाश्री : हाँ, आपको माँगने हैं, लेकिन माँगने का तरीका है। आपको नहीं माँगने हैं लेकिन आपको चंदूभाई से कहना है कि अपने पैसे व्यापार में लगाने हैं न! इसलिए भाई से कहो और चंदूभाई कहेंगे कि 'भाई, हमें बहुत तकलीफ है, कुछ दे देंगे तो आपकी मेहरबानी।' फिर जितने दें उतने ले लेने हैं और कषाय नहीं करने हैं। कषाय रहित माँग करो। जबकि लोग कषाय सहित माँगते हैं।

और व्यवहार तो सारा चंदूभाई चला लेंगे। चंदूभाई, कोई उसे आत्मा की तरह नहीं देखता है, आप आत्मा के तौर पर देखते हो। चंदूभाई तो नगीनभाई के तौर पर देखते हैं, इसलिए उनके साथ

व्यवहार निपटा देना है। लाख रुपए हैं, उनमें से पचास हज़ार दे सके, तो पचास हज़ार और वह कहे, मेरे पास अभी पच्चीस हज़ार हैं, तो पच्चीस हज़ार का चेक लिख दूँ। (तो कहना है अच्छा, बाकी के) दो-तीन महीनों बाद दे देना। हमें आजकल व्यापार में बहुत तकलीफ है। व्यवहारिक तौर से ऐसी सब बातें कर सकते हैं। सिर्फ राग-द्वेष नहीं होने चाहिए। व्यवहार तो अज्ञानी जैसा ही होता है। लेकिन वह राग-द्वेषवाला व्यवहार और यह राग-द्वेष रहित व्यवहार, बस। नाटक-सिनेमा देखने भी जा सकते हैं वाइफ के साथ। वाइफ में शुद्धात्मा नहीं दिखते? शुद्धात्मा दिखते हैं लेकिन सिनेमा देखने भी जा सकते हैं, वाइफ की बहुत इच्छा हो तो। और उससे कोई आत्मा चला नहीं जाता। पहले राग-द्वेष होते थे और अब बिना राग-द्वेष का है।

निश्चय से गाढ़ कर्मों का करना है *निकाल*

प्रश्नकर्ता : आप से प्रश्न पूछा था कि अनुभव होता है लेकिन आनंद नहीं आता, तब आपने कहा था कि *चीकणे* (गाढ ऋणानुबंधवाले) कर्म हैं इसलिए। तो वे *चीकणे* कर्म जल्दी कैसे खत्म हों सकेंगे?

दादाश्री : शुद्धात्मा में रहेंगे तो जल्दी खत्म हो जाएँगे। अगर *चीकणे* कर्मों के साथ हम चिपक न जाएँ और हम उन्हें 'देखते' रहें तो जल्दी खत्म हो जाएँगे।

प्रश्नकर्ता : वह प्रोसेस (प्रक्रिया) तो चल ही रहा है।

दादाश्री : बस, तो खत्म हो जाएँगे, देर नहीं लगेगी। घर की फाइलों के साथ *चीकणे* कर्म लाए हैं, बाहर की फाइल के साथ हल्के होते हैं। घर की फाइल के साथ *चीकणे* होते हैं ऐसा अनुभव है न?

अभी अगर गाड़ी में किसी के साथ परिचय हो गया और किसी ने चाय पिला दी, तो वे सब हल्की फाईलें हैं। लेकिन इन *चीकणी* फाइलों का *निकाल* करना बहुत मुश्किल होता है। आप समभाव से *निकाल* करो तो भी बार-बार गाढ़ापन फिर से आ जाता है। 'समभाव से *निकाल* ही करना है' आपको उतना ही कहना है, अपने आप हो जाएगा। क्योंकि लंबे समय से ये फाइलें चिपकी हुई हैं! और काफी हिसाब सेट हो गया है।

कोई *चीकणी* फाइल आनेवाली हो और उसका समभाव से *निकाल* करना हो तो, अब उसके लिए आने से पहले ही हमें उसका शुद्धात्मा देख लेना चाहिए। रिलेटिव और रियल देख लेना है। फिर हमने उसका समभाव से *निकाल* करना तय किया हो, तो समभाव से *निकाल* हो जाएगा। सामनेवाली फाइल टेढ़ी हो तो *निकाल* नहीं हो पाता, लेकिन आपको वह नहीं देखना है। आपका तो निश्चय है कि समभाव से *निकाल* करना है, फिर जो हुआ उसे देखना है।

प्रश्नकर्ता : इतनी ही परेशानी है कि सामनेवाला जब गाली देता है तब समभाव नहीं रहता।

दादाश्री : वह परेशानी अब नहीं होगी। अब वापस मत बोलना। पहले चंदूभाई था न, तब परेशानी थी न? तो अब तू शुद्धात्मा बन गया, पूरा बदलाव आ गया तुझ में, इसलिए अब परेशानी नहीं होगी। वह भी व्यवहार से, बाइ रिलेटिव व्यू पोइन्ट से वह नगीनभाई हैं और रियल व्यू-पोइन्ट से शुद्धात्मा है। अगर वह शुद्धात्मा है तो वह जो गाली दे रहा है, वह तो रिलेटिव कर रहा है और वह भी आपको गाली नहीं दे रहा, इस रिलेटिव से कह रहा है। यानी *पुद्गल* (जो पूरण और गलन होता है) की

कुश्ती कर्म के अधीन हो रही है, उसे देखते रहो। दो *पुद्गल* कुश्ती करें, उसे आप देखते रहो। कौन जीता और कौन हारा और किसने थप्पड़ मारा, वह देखते रहो। नहीं देख सकते? बाहर कुश्ती देखने नहीं गए थे क्या? तो अब इसे देखना। यानी यह *पुद्गल* की कुश्ती, उसका *पुद्गल* और तेरा *पुद्गल* लड़ता है तो वह कर्म के उदय के अधीन है। उसमें किसी का गुनाह है क्या? वह शुद्ध ही दिखना चाहिए। ऐसा कुछ दिखाई देता है या नहीं दिखाई देता आपको?

प्रश्नकर्ता : अभी भी वही परेशानी आती है। वहाँ समभाव नहीं रहता।

दादाश्री : क्यों नहीं रहता? किसे नहीं रहता? वह तो चंदूभाई को नहीं रहता, उससे आपको क्या लेनादेना? बिना बात के चंदूभाई की इतनी तरफदारी करते रहते हो?

प्रश्नकर्ता : वह अलग ही नहीं रहता न!

दादाश्री : अलग हो चुका है। वह तुझे वर्तन में सेट करना पड़ेगा। ऐसे खिसक जाए तो धक्का मारकर हमें फिर से खिसकाकर ठीक करना पड़ेगा। अलग पड़ गया है तो क्या दो दिन तक हैन्डल नहीं मारना पड़ेगा?

रियली निर्दोष, रिलेटिवली भी निर्दोष

प्रश्नकर्ता : यानी संपूर्ण अभिप्राय रहित कैसे बन सकते हैं?

दादाश्री : आपको यह अभिप्राय रहित ज्ञान ही दिया है। बाइ रियल व्यू पोइन्ट वे 'शुद्धात्मा' हैं और बाइ रिलेटिव व्यू पोइन्ट वे 'नगीनभाई' हैं और रिलेटिव मात्र कर्म के अधीन होने से 'नगीनभाई' भी निर्दोष हैं। अगर खुद स्वाधीन होते तो 'वे' दोषित माने जाते, लेकिन 'वे' बेचारे लट्टू जैसे हैं। इसलिए 'वे' निर्दोष हैं। वैसे शुद्धात्मा हैं और बाह्य रूप से निर्दोष हैं। बोलो अब, वहाँ तो अभिप्राय रहित रह ही सकते हैं न।

हमारी बुद्धि बचपन में ऐसी थी। सामनेवाले के लिए 'स्पीडी' अभिप्राय बना देती थी। किसी के भी लिए स्पीडी अभिप्राय बना देती थी। इसलिए मैं समझ सकता हूँ कि आपका यह सब कैसा चल रहा होगा?

वास्तव में तो किसी के लिए भी अभिप्राय रखने जैसा जगत् है ही नहीं। किसी के लिए अभिप्राय रखना, वही अपना बंधन है और किसी के लिए अभिप्राय नहीं रहे, वही अपना मोक्ष है। किसी का और हमारा क्या लेना-देना? वह अपने कर्म भोग रहा है, हम अपने कर्म भोग रहे हैं। सब अपने-अपने कर्म भोग रहे हैं। उसमें किसी का लेना-देना ही नहीं है, किसी के लिए अभिप्राय बनाने की ज़रूरत ही नहीं है।

दोषित दिखे वहाँ ज़रूरत है प्रतिक्रमण की

किसी की भूल दिखाई देने से संसार खड़ा हो जाता है और खुद की भूल दिखाई देने से मोक्ष होता है।

प्रश्नकर्ता : 'रिलेटिव' तो दोषित ही दिखाई देगा न?

दादाश्री : दोषित कब माना जाएगा? अगर उसका शुद्धात्मा ऐसा कर रहो हो, तब। लेकिन शुद्धात्मा तो अकर्ता है। वह कुछ भी कर सके ऐसा नहीं है। यह तो 'डिस्चार्ज' हो रहा है, उसमें तू उसे दोषित मानता है। दोष दिखाई दे तो उसका प्रतिक्रमण करना चाहिए। जब तक जगत् में कोई भी जीव दोषित दिखाई देता है, तब तक समझ लेना कि अंदर शुद्धिकरण नहीं हुआ है। तब तक इन्द्रिय ज्ञान है।

आखिर में वह साफ करना पड़ेगा। यह कपड़ा साफ रखना है। क्रमण में हर्ज नहीं है। क्रमण यानी यों ही मैला होता रहे तो उसमें हर्ज नहीं है। साधारणतया मैला होता रहे उसका हर्ज नहीं है, लेकिन एकदम से दाग़ लग जाए, तो उसे धो लेना चाहिए। हमारे निमित्त से उसे दुःख हुआ, उसका दाग़ अपने रिलेटिव पर रहा न। उस रिलेटिव को दाग़वाला नहीं रखना है।

प्रश्नकर्ता : तो 'रिलेटिव' साफ रखना ज़रूरी है?

दादाश्री : ऐसा नहीं है। 'रिलेटिव' पुराना होगा, कपड़ा पुराना हो जाए, तो उसमें हर्ज नहीं है। लेकिन क्रमण से एकदम दाग़ लग जाए, तो हमारे विरुद्ध कहलाएगा। इसलिए उस दाग़ को धो लेना चाहिए। यदि इस तरह अतिक्रमण हो जाए, तो प्रतिक्रमण करना चाहिए। प्रतिक्रमण करने से क्या होता है कि आत्मा उसके 'रिलेटिव' पर खुद का दबाव डालता है। क्योंकि अतिक्रमण यानी क्या हुआ कि रियल पर दबाव डालता है। जो कर्म अतिक्रमण है और अगर अब उसमें इन्टरेस्ट आ जाए, तो फिर से चिपक जाएगा। इसलिए जब तक हम गलत को गलत नहीं मानेंगे, तब तक गुनाह है। यानी यह प्रतिक्रमण (फाइल नंबर -1 से) करवाने की ज़रूरत है। पहले की भूलें धोने के लिए 'रिलेटिव' में पश्चाताप और 'रियल' में आनंद, ये दोनों होने चाहिए।

पूरा जगत् भगवान स्वरूप ही है। अब, ये जो सब दुश्मन और मित्र दिखाई देते हैं, वह सब भ्रांति है। वह भ्रांतिज्ञान दूर हो जाए तो सभी तरफ शुद्धात्मा ही है। जब सभी तरफ भगवान दिखाई देने लगेंगे न, तब निर्दोष दृष्टि हो जाएगी। फिर पूरे जगत् को (निर्दोष देख सकेंगे)।

प्रश्नकर्ता : वह होगी क्या? सभी में भगवान दिखाई देंगे?

दादाश्री : भगवान तो आपको दिखा दिए हैं न। अब आगे शक्ति बढ़ते-बढ़ते.... फुल्ली (पूर्ण) दिखाई देते जाएँगे।

रियल-रिलेटिव अलग होना चाहिए लक्ष में

अब प्रश्न क्या है? क्या कहना चाहता है तू?

प्रश्नकर्ता : दादा, मैंने प्रश्न नहीं पूछा था, इस बहन ने पूछा था।

दादाश्री : वह चाहे जिसने पूछा हो, लेकिन तेरा प्रश्न है ऐसी ही आवाज़ आई।

प्रश्नकर्ता : मेरा प्रश्न नहीं था, दादा।

दादाश्री : उससे आपको क्या लेना-देना है? आप शुद्धात्मा, आपको क्या लेना-देना? आप शुद्धात्मा बन गए, फिर भी चंदूभाई का पक्ष ले रहे हो?

प्रश्नकर्ता : नहीं लेना चाहिए, दादा।

दादाश्री : अभी लिया न, सभी ने यह देखा। चाहे किसी का भी प्रश्न हो, लेकिन प्रश्न तो आपने ही पूछा न? मुझे तो ऐसा ही लगा कि आपने पूछा है। लेकिन आप यानी किसने पूछा? वह चंदूभाई ने पूछा न? आप शुद्धात्मा हो, आपको क्या लेना-देना है? इसलिए आपको कहना है कि 'चंदूभाई ने प्रश्न पूछा, लेकिन यह चंदूभाई का खुद का नहीं है।' फिर हम पूछें कि 'तो फिर किसका है?' तब कहना, 'इन बहनजी का।' और उनका भी खुद का नहीं है। वे भी शुद्धात्मा, ऐसा सभी जागृति में रहना चाहिए। उसे ज्ञान कहते हैं कि रिलेटिव और रियल, सभी लक्ष में नहीं रहना चाहिए क्या?

प्रश्नकर्ता : रहना चाहिए, दादा।

दादाश्री : हाँ में हाँ मिला रहे हो, लेकिन रहता नहीं है और फिर शोर मचाते हो। लक्ष में रहना चाहिए न? आपका तय होना चाहिए कि यह मुझे लक्ष में रखना है। फिर दादा की कृपा उतरेगी। आपका ही एक भी बार तय नहीं होता न। ऐसा निश्चय नहीं है न?

प्रश्नकर्ता : आप तो सारे आवरण खोल देते हैं। वर्ना यह जितना जाना हो या जितना सुना हो, जितना पढ़ा हो, उसके अलावा आगे नया पता नहीं चलता। आप बताएँ तो तुरंत पता चल जाता है कि 'यह बात तो थी ही लेकिन यह दिख नहीं रही थी।'

दादाश्री : वर्ना वह दिखेगा नहीं न।

प्रश्नकर्ता : आप ने जो कहा कि वह तो चंदूभाई का प्रश्न है, तू तो शुद्धात्मा! तुझे क्या लेना-देना? यानी ऐसे दोनों तरफ जुदापन समझकर...

दादाश्री : वह अलग (जुदापन) उसी को ज्ञान कहते हैं। हमने जो दिया है वह वैसा ज्ञान दिया है, लेकिन आपकी पहले की जो आदते हैं न, वे छोड़ती नहीं हैं न। पहले से आदत पड़ गई है न! इसलिए आदत के अनुसार हो जाता है। उसमें भी हर्ज नहीं है, प्रकृति है इसलिए ऐसा हो ही जाएगा। लेकिन जागृति में रहना चाहिए कि ऐसा नहीं होना चाहिए।

स्वरूप के अलावा सबकुछ पराया

यह अपना और यह पराया। (इसे) अपना मानते थे वह भूल थी। वह भूल खत्म हो गई तो वहाँ उसमें सबकुछ अपना नहीं होता। जितना उसका हिसाब है उतना ही, जितना उसका बाकी हो न, उतना देकर छोड़ देना है। अन्य ज़्यादा कोई झंझट नहीं करनी है।

प्रश्नकर्ता : यानी यह रिलेटिव व्यापार और यह रियल का व्यापार उन दोनों के बीच साम्यता जैसा है न?

दादाश्री : समान ही है न! यह तो अपनी भूल थी, उस वजह से मार खा रहे थे, उतना ही। भूल खत्म हो गई इसलिए मार खाना बंद हो गया।

व्यवहार अपना स्वरूप नहीं है

जब से हमने तय कर लिया कि, वह व्यापार अपना नहीं है तभी से, अपना काम अपने व्यापार में ही सतर्कतावाला रहता है। वह जो अपना व्यापार नहीं है, वहाँ हम इतने सतर्क नहीं रहते। फिर वहाँ पर रकम दे आएँ, ऐसा नहीं होगा। पहले जो दे दी है, वह देख लेनी है लेकिन अब नई नहीं देनी है। जबसे हमने कहा कि अपना व्यापार नहीं है तभी से मन बदल जाता है न?

अभी अगर एक व्यक्ति का मकान जल जाए तो उसे कितना दुःख होगा? लेकिन आज बेचकर रुपए ले लिए और दस्तावेज कर लेने के बाद कल जल जाए तो?

प्रश्नकर्ता : तो कुछ नहीं होगा, दादा।

दादाश्री : ऐसा? वही मकान। हमने तय कर लिया हो कि अब हमने बेच दिया हैं और पैसे हाथ में आ गए, फिर भले ही उसने दूसरे को पैसे दिए हों और उसने (हमें) नहीं दिए हों। लेकिन अपना बिक गया, कहेगा। इसलिए फिर उसमें चित्त नहीं रहता। फिर रोएगा नहीं, बल्कि अपने आप खुश होगा कि 'ओहोहो! मैं तो बहुत अक्लमंद हूँ।' देखो न! बिक जाने के बाद नहीं रोता न! बिक जाने के बाद अगर पैसे हाथ में नहीं आएँ हो तो, मन में ऐसा लगता है कि कोई परेशानी आएगी तो? बिक गया, दस्तावेज सारे हो

गए, लेकिन पैसे नहीं आ जाएँ तब फिर शंका होने लगती है 'अगर सामनेवाला टेढ़ा चलेगा, नहीं देगा तो?' पैसे हाथ में आ जाने के बाद फरियाद नहीं करता। तो आपको तो मैंने मूलधन भी हाथ में दे दिया, सबकुछ हाथ में दे दिया है। आपने कहा था कि अब कुछ रहा नहीं है, उसके बाद तो मैंने आपको अलग कर दिया।

रहो अपनी बाउन्ड्री के अंदर

प्रश्नकर्ता : यह जो मकान का उदाहरण दिया, उसमें पैसे लेकर बेच दिया, इसलिए उसे खुद को भरोसा आ जाता है कि यह मेरा नहीं है। इसलिए उसे दुःख भी नहीं होता। ममता छूट गई उसकी। उसी प्रकार अपनी यह रियल वस्तु में क्या होता है?

दादाश्री : वह तो जानेगा तब छूटेगा कि वास्तव में अपना मालिकीपना कहाँ हैं? खुद की बाउन्ड्री का नाप देखकर आए, तो फिर अन्य किसी की बाउन्ड्री में दखल नहीं करता। जब तक उसे समझ में नहीं आता तब तक मालिकीपना रखता है। उसकी समझ में आ जाए तो तुरंत दे देता है। तेरा मालिकीपना अब किसमें है कह दे न?

प्रश्नकर्ता : मालिकीपना तो दादा ने कहा न, खुद की बाउन्ड्री की मालिकी पता चली, इसलिए फिर अन्य कहीं भी मालिकी रखेगा ही नहीं न।

दादाश्री : खुद की मालिकीवाली जगह देख लें और वहाँ पर हम सीमा रेखा देख लें, फिर हमें औरों के साथ क्या लेना-देना? जिसे खुद का और पराए का तय हो गया है, उसे किसी भी जगह पर, अन्य कहीं भी ममता रहेगी ही नहीं न! *यह पुद्गल* का है और यह आत्मा का है, ऐसा तय हो गया, उसे और कहीं कुछ कैसे रहेगा फिर?

रिलेटिव सारा ज्ञेय, खुद उसका ज्ञाता

प्रश्नकर्ता : स्वरूप का ज्ञान प्राप्त करने के बाद भी मन में विकार रहते हैं। उसका क्या कारण है?

दादाश्री : मन के विकार तो ज्ञेय हैं। यानी कि वे देखने की चीज़ है। पहले हम मानव स्वभाव में थे। उसमें यह अच्छा और यह बुरा, ये अच्छे विचार और ये बुरे विचार, ऐसा था। अब आत्मस्वभाव में आ गए हैं। इसलिए सभी विचार एक समान ही हैं! विचार मात्र ज्ञेय हैं और 'हम' ज्ञाता हैं। ज्ञेय-ज्ञाता का संबंध है। फिर कहाँ रही दख़ल, वह बताओ?

प्रश्नकर्ता : इस प्रकार आत्मदृष्टि से देखने के लिए कुछ पुरुषार्थ करना पड़ता है या अपने आप ही दिखाई देता है?

दादाश्री : अपने आप ही दिखाई देता है! हमने जो ज्ञान दिया है, उससे रिलेटिव और रियल को देखो। सभी रिलेटिव विनाशी चीज़ें हैं और रियल अविनाशी है। ये सब ज्ञेय जो दिखाई देते हैं, वे सब ज्ञेय विनाशी हैं। स्थूल संयोग, सूक्ष्म संयोग, वे विनाशी संयोग हैं। यह सब यहाँ सत्संग में आकर पूछ लेना चाहिए और समझ लेना चाहिए, तो हर एक बात की जागृति रहेगी और जागृति रहेगी, तो फिर कुछ भी करना नहीं पड़ेगा। स्वरूप का ज्ञान प्राप्त होने के बाद कुछ भी नहीं करना पड़ता। ज्ञान में ही रहता है। आत्मा ज्ञायक स्वभाव में ही रहता है। ज्ञायक अर्थात् जानते ही रहने के स्वभाव में रहना। आत्मा में और कोई स्वभाव उत्पन्न ही नहीं होता।

आज्ञापालन से अनुभव होता है स्व-सुख का

प्रश्नकर्ता : ज्ञान लेने के बाद आज्ञा में न रह पाएँ तो क्या परिणाम आएगा?

दादाश्री : यहाँ बारिश आने के बाद अगर उसने कुछ भी नहीं बोया तो क्या हो जाएगा? कोई ज़मीन ले जा सकता है क्या? ज़मीन तो अपनी वैसी ही रही न। और अगर आज्ञा में रहेगा, तो मोक्ष का सुख भोगेगा।

प्रश्नकर्ता : आज्ञा का पालन नहीं करेगा तो उसके अन्य दोष लगेंगे?

दादाश्री : कुछ नहीं होगा। यह ज़मीन है, तो बारिश आने के बाद अगर हमने बीज नहीं डाले, तो ज़मीन कहीं चली नहीं जाएगी। बीज व्यर्थ जाएँगे हमारे।

यह तो ऐसा है न कि, जितनी हम आज्ञाओं की आराधना करेंगे, उतना ही फल वे देंगी। आत्मा तो प्राप्त हो गया, अब आज्ञा उसका प्रोटेक्शन (रक्षण) है, आत्मा का संपूर्ण प्रोटेक्शन है। जितना प्रोटेक्शन रखोगे, उतना अपना, वर्ना थोड़ा लीकेज हो जाएगा। उससे आत्मा का कुछ नहीं बिगड़ जाएगा, लेकिन लीकेज हो जाने के कारण हमें जो सुख महसूस हो रहा था वह नहीं मिलेगा। और संसारिक जंजाल उलझाएँगी। सफोकेशन (घबराहट) होता रहेगा और अगर आज्ञा का पालन करेगा तो सफोकेशन नहीं होगा और खुद को स्वतंत्रता महसूस होगी।

रिलेटिव को देखनेवाला रियल, स्व-पद में

प्रश्नकर्ता : अपनी ये पाँच आज्ञाएँ हैं, रियल, रिलेटिव और व्यवस्थित, ये सभी ऐसे हैं कि देखत भूली टाल दें।

दादाश्री : उसमें सब आ जाता है, सब टाल दे। एक-एक वाक्य ऐसा है कि सबकुछ टाल दे। वह तो यह रिलेटिव देखनेवाला, रियल देखे बगैर नहीं रहता। तभी से देखत भूली टल जाती है न!

प्रश्नकर्ता : यानी तत्त्वदृष्टि से सारी ही (रिलेटिव दृष्टि) को खत्म कर देती है।

दादाश्री : इस रिलेटिव को देखे तो अंदर उसका हिसाब आ ही गया। रिलेटिव देखता है अर्थात् रियल को जानता है। तेरा हिसाब है, वह जान गया है न?

प्रश्नकर्ता : यह रिलेटिव है कहा, तो फिर खुद अलग हो ही गया न, देखनेवाला अलग हो गया न?

दादाश्री : हाँ, देखनेवाला अलग हो गया। रिलेटिव कहनेवाला अलग हो गया न।

प्रश्नकर्ता : हमने ज्ञान लिया है, तो हमें मृत्यु के समय क्या करना चाहिए?

दादाश्री : ज्ञाता-दृष्टा रहना चाहिए। अपने अंदर क्या चल रहा है उसे देखते ही रहना चाहिए। वैसा नहीं रह पाएँ, तो दादा की पाँच आज्ञा में रहना चाहिए, रिलेटिव-रियल को देखते रहना चाहिए।

निरंतर आज्ञा में रहने का उपाय

प्रश्नकर्ता : दादा, आप कहते हैं कि आज्ञा बहुत सीधी हैं, सरल हैं, वह बात ठीक है, लेकिन पहली और दूसरी आज्ञा में निरंतर रहना वह क्या आसान है?

दादाश्री : रहने में परेशानी नहीं है लेकिन ऐसा है न, उपवास करके देखना, रह पाते हो या नहीं रह पाते?

प्रश्नकर्ता : वह समझ में नहीं आया, दादा।

दादाश्री : पूरे दिन का उपवास करके देखना, रह पाते हो या नहीं? क्योंकि यह तो खुराक आई कि डोज़िंग होने लगती है।

हम आपसे इतना ही कहते हैं कि यह विज्ञान किसी जन्म में नहीं मिला है। इस जन्म में मिला है तो संभाल लेना। अक्रम है यह, और घंटेभर में आत्मज्ञान प्राप्त हो ऐसा है। कभी भी अशांति नहीं होगी, वैसा। निरंतर समाधि में रहना चाहो तो रहा जा सकता है। खाते-पीते, बैठते-उठते, पत्नी के साथ रहते हुए, (लेकिन आज्ञा में) रह सकें ऐसा है। यदि नहीं रह पाओ तो मुझ से पूछ लेना कि किसी जगह पर नहीं रह पाते हैं, तो मैं बता दूँगा कि यह पोइन्ट दबा देना। 'मैं शुद्धात्मा हूँ' ऐसा बोलने की ज़रूरत नहीं है, रिलेटिव और रियल देखते रहना।

सहजभाव से शब्द, क्रियाकारी

प्रश्नकर्ता : आपके ये जो सारे शब्द हैं, 'फाइल, पज़ल, रियल, रिलेटिव, रोंग बिलीफ' वे सारे शब्द ही पूरे दिन क्रियाकारी होते रहते हैं। उस शब्द का उपयोग करते ही शांति हो जाती है।

दादाश्री : हाँ, क्योंकि सहज स्वभाव से निकले हुए शब्द हैं न। यह एक-एक शब्द इफेक्टिव है और *'निकाल'* तो बहुत बड़ा शब्द है। सिर्फ *निकाल* ही नहीं, रियल और रिलेटिव तो मनुष्य के लिए बहुत ज़्यादा इफेक्टिव हो जाता है। ये सारे शब्द इफेक्टिव हैं। इस एक-एक शब्द पर, आज नहीं, बाद में भी और पृथक्करण होगा।

- जय सच्चिदानंद

आत्मज्ञानी पूज्य नीरू माँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

गोवा — **दिनांक : 13 मई** — **समय :** शाम 4 से 7 — **संपर्क :** 8698745655
स्थल : होटल यशोदा, सारस्वत बेंक के उपर, पोंडा, नोर्थ गोवा.

कारवार — **दिनांक : 14 मई** — **समय :** शाम 5-30 से 7-30 — **संपर्क :** 9448065782
स्थल : श्री माहलदेव श्री महासती देवी मंदिर, अर्गा, कारवार (कर्नाटक).

बेलगाँव — **दिनांक : 15 मई** — **समय :** शाम 4 से 6 — **संपर्क :** 9945894202
स्थल : श्री जीवेश्वर भवन, सोनार गल्ली कोर्नर, मेन रोड, म. वडगाँव, बेलगाँव.

निपानी — **दिनांक : 16 मई** — **समय :** शाम 4 से 6 — **संपर्क :** 9945894202
स्थल : श्री विष्णु निवास, श्रीनगर 1st लेन, मुर्गुद रोड, निपानी, जि. बेलगाँव.

हुबली — **दिनांक : 17-18 मई** — **समय :** शाम 5 से 8 — **संपर्क :** 9739688818
स्थल : गुजरात भवन, देशपांडे नगर.

बेंगलोर — **दिनांक : 21 मई** — **समय :** शाम 6 से 8-30 — **संपर्क :** 9590979099
स्थल : महाराष्ट्र मंडल, दूसरा क्रोस, रामचंन्द्र रोड, गांधीनगर, बेंगलोर.

चितारी — **दिनांक : 14 मई** — **समय :** रात 8 से 10 — **संपर्क :** 9783869675
स्थल : लक्ष्मी नारायण चौक, मेन चौराहा, चितरी, डुंगरपुर.

उदयपुर — **दिनांक : 15 मई** — **समय :** शाम 4 से 6 — **संपर्क :** 9414538411
स्थल : 30 ए, मयूर कोम्पलेक्ष, भाग्यश्री गार्डन लेन, हिरन मगरी, सेक्टर 4, उदयपुर.

ब्यावर — **दिनांक : 16 मई** — **समय :** रात 8 से 10 — **संपर्क :** 9982064075
स्थल : होटल राज महल, सेंदडा रोड, ब्यावर.

भूलें मिटाने की चाबियाँ

मन-वचन-काया से प्रत्यक्ष दादा भगवान की साक्षी में क्षमा माँगते रहना। हर कदम पर जागृति रहनी चाहिए। अपने में क्रोध-मान-माया-लोभ के कषाय तो भूलें करवाकर उधारी करवाएँ, ऐसा माल है। वे भूलें करवाते ही हैं और उधारी खड़ी करते हैं, पर उसके सामने हमें तुरन्त ही, तत्क्षण माफ़ी माँगकर जमा करके चोखा कर लेना चाहिए। यह व्यापार पैन्डिग नहीं रखना चाहिए। यह तो दरअसल नक़द व्यापार कहलाता है।

प्रश्नकर्ता : अभी जो भूलें होती हैं, वे पिछले जन्म की हैं न?

दादाश्री : पिछले जन्म के पापों को लेकर ही ये भूलें हैं। पर इस जन्म में फिर भूलें मिटती ही नहीं हैं और बढ़ाते जाते हैं। भूल को मिटाने के लिए भूल को भूल कहना पड़ता है। उसका पक्ष नहीं लेना चाहिए। यह ज्ञानी पुरुष की चाबी कहलाती है। इससे चाहे जैसा ताला खुल जाता है।

ज्ञानी पुरुष आपकी भूल के लिए क्या कर सकते हैं? वे तो मात्र आपकी भूल बताते हैं, प्रकाश डालते हैं, रास्ता दिखाते हैं कि भूलों का पक्ष मत लेना। पर यदि भूलों का पक्ष लें कि, 'हमें तो इस दुनिया में रहना है, तो ऐसा कैसे कर सकते हैं?' अरे! यह तो भूल को पोषण देकर उसका पक्ष मत लेना। एक तो मुआ, भूल करता है और ऊपर से कल्पांत करता है, तो *कल्प* (कालचक्र) के अंत तक रहना पड़ेगा!

भूल को पहचानने लगा, तो भूल मिटती है। कुछ लोग कपड़े खींच- खींचकर नापते हैं और ऊपर से कहते हैं कि आज तो पाव गज कपड़ा कम दिया। यह तो इतना बड़ा रौद्रध्यान और फिर उसका पक्ष? भूल का पक्ष नहीं लेना होता है। घीवाला घी में किसीको पता नहीं चले ऐसे मिलावट करके पाँच सौ रुपये कमाता है। वह तो मूल के साथ वृक्ष बो देता है। अनंत जन्म खुद ही खुद के बिगाड़ देता है।

जागृत हुए, इसलिए सब पता चलता है कि यहाँ भूल होती है, ऐसे भूल होती है। नहीं तो खुद को खुद की एक भी भूल मिले नहीं। दो-चार बड़ी भूलें होती हैं न, वे दिखती हैं। उसे खुद को दिखती है उतनी ही। कभी बोलते भी हैं कि ज़रा-सा क्रोध है और थोड़ा-सा लोभ भी है, ऐसा बोलते भी हैं, पर हम कहें कि, 'आप क्रोधी हैं', तब तुरन्त क्रोध का रक्षण करते हैं, बचाव करते हैं, वकालत करते हैं। हमारा क्रोध, वह क्रोध नहीं माना जाता, ऐसी वकालत करते हैं, और जिसकी वकालत करो वह हमेशा आप पर चढ़ बैठता है।

जिसने एक बार नक्की किया हो कि मुझमें जो भूलें रही हों उसे मिटा देनी है, वह परमात्मा हो सकता है! हम अपनी भूल से बँधे हैं। भूल मिटे तब तो परमात्मा ही हैं! जिसकी एक भी भूल नहीं, वह खुद ही परमात्मा है। यह भूल क्या कहती है? 'तू मुझे जान, मुझे पहचान।' यह तो ऐसा है कि भूल को खुद का अच्छा गुण मानते थे। भूल का स्वभाव कैसा है कि वह हमारे ऊपर शासन चलाती है। पर भूल को भूल जाना तो वह भाग जाती है। फिर खड़ी नहीं रहती। जाने लगती है। पर यह तो क्या करते हैं कि एक तो भूल को भूल जानते नहीं हैं और ऊपर से उसका पक्ष लेता है। मतलब भूल को घर में ही भोजन कराते हैं।

जगत् के सारे लोगों को क्रोध-मान-माया-लोभ निकालने हैं, किसे निकालने की इच्छा नहीं होगी? वे तो बैरी ही हैं, ऐसा सब जानते हैं, फिर भी रोज़ भोजन कराते हैं और बड़ा करते हैं। खुद की भूल ही दिखे नहीं, फिर मनुष्य भूलों को खुराक ही देगा न!

(परम पूज्य दादाश्री की वाणी में से संकलित)

दादाई जगकल्याण मिशन - सत्संग हाइलाईट्स

29 जनवरी - 1 फरवरी : इस वर्ष पूज्यश्री के सौराष्ट्र सत्संग की शुरुआत राजकोट शहर से हुई थी। प्रथम दिन महात्माओं के लिए रखे गए विशेष सत्संग में GNC के बच्चों ने प्रेज़न्टेशन किया और पुराने महात्माओं ने प्रगति के लिए प्रश्न पूछे थे। ज्ञानविधि में लगभग 3100 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया और 8000 से भी ज़्यादा महात्मा उपस्थिति थे। राजकोट त्रिमंदिर में दर्शन हेतु पूज्यश्री पधारे थे और लगभग 600 सेवार्थिओं को सत्संग-दर्शन का लाभ दिया। फॉलोअप सत्संग में 50 प्रतिशत से ज़्यादा नए महात्मा आएँ। राजकोट से पोरबंदर जाते समय रास्ते में गोंडल और उपलेटा के महात्माओं ने पूज्यश्री के दर्शन किए।

3-5 फरवरी : पूज्यश्री ने 2003 में पोरबंदर से ज्ञानविधि देने की शुरुआत की थी। 12 वर्ष के लंबे अंतराल के बाद पोरबंदर में पुनः सत्संग और ज्ञानविधि का आयोजन किया गया। LMHT के बच्चों द्वारा स्वागत गीत से सत्संग का शुभारंभ हुआ। ज्ञानविधि में 1400 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया और 2500 से भी ज़्यादा महात्मा उपस्थिति रहें थे। स्थानिय महात्माओं के लाभ हेतु और सेवार्थिओं के लिए पूज्यश्री का सत्संग-दर्शन और समुद्र-तट, बीच पर मोर्निंग वॉक का आयोजन किया गया। आप्तपुत्र सत्संग और प्रोजेक्टर शो द्वारा पहले से ही लोगों को ज्ञान लेने के लिए प्रेरित किया गया था। आप्तपुत्र द्वारा फॉलोअप सत्संग में भी 1000 से ज़्यादा महात्मा उपस्थित रहें।

6-8 फरवरी : जूनागढ में आयोजित सत्संग-ज्ञानविधि दौरान 2200 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। उससे पहले आसपास के लगभग 20 गाँवों में आप्तपुत्रों के सत्संग का आयोजन किया गया। YMHT के युवक और युवतियों द्वारा AABB और नौ कलमों पर प्रेज़न्टेशन किया गया। स्थानिय महात्माओं के साथ पूज्यश्री ने जूनागढ की कृषि युनिवर्सिटी में मोर्निंग वॉक किया। जूनागढ से भावनगर जाते हुए पूज्यश्री अमरेली त्रिमंदिर पधारे थे। वहाँ पर स्टोप एन्ड स्टे और बुक स्टॉल का उद्घाटन किया और स्थानिय महात्माओं को पूज्यश्री के दर्शन का लाभ मिला था।

9-11 फरवरी : भावनगर में दो दिवसीय सत्संग के बाद आयोजित ज्ञानविधि में 600 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। सेवार्थी सत्संग दौरान GNC के बच्चों द्वारा सुंदर प्रेज़न्टेशन किया गया। LMHT, YMHT, सिनियर सिटिज़न जैसे अलग-अलग ग्रुप द्वारा हररोज़ पूज्यश्री का स्वागत किया गया। सेवार्थी सत्संग में सभी महात्मा पूज्यश्री के सत्संग और दर्शन से धन्य हो गए।

12-15 फरवरी : पालीताणा तीर्थक्षेत्र में पूज्यश्री के सान्निध्य में महात्माओं के लिए यात्रा एवं शिविर का आयोजन हुआ। पूरे भारत से 4000 से भी अधिक महात्मा आएँ। प्रथम दिन सत्संग के बाद, दूसरे दिन पूज्यश्री के साथ सभी महात्मा अति उल्लास से 'असीम जय-जयकार' गाते हुए पहाड़ यात्रा में सामिल हुए। पर्वत की चोटी पर मूल नायक श्री आदिनाथ भगवान के दर्शन के बाद पूज्यश्री ने सीमंधर स्वामी के जिनालय में ब्रह्मचर्य साधकों को ब्रह्मचर्य की विधि करवाईं। परम पूज्य दादा भगवान ने जिनके बारे में बताया था, उन अंगारशा पीर की दरगाह पर भी पूज्यश्री दर्शन के लिए गए थे और बंदगी की थी। वापस लौटते समय श्री पद्मावती माताजी के मंदिर में सत्संग करके जगत् कल्याण के लिए प्रार्थना करवाईं। समग्र परिसर महात्माओं की उपस्थिति से भर गया था। तीसरे दिन आप्तपुत्र सत्संग के बाद शाम की ज्ञानविधि में 1200 मुमुक्षुओं ने ज्ञान प्राप्त किया था, जिनमें कुछ साध्वीजी भी थे। रात्रि सेशन दौरान महात्माओं ने भक्ति और गरबा का आनंद उठाया था। अंतिम दिन प्रश्नोत्तरी सत्संग के बाद 'यात्रा से जेकपोट' का आनंद उठाकर सभी महात्मा अपने-अपने घर जाने के लिए निकल पड़ें।

22-24 फरवरी : दादा दर्शन (अहमदाबाद) में आप्तसिंचन के साधकों के लिए पूज्यश्री के सान्निध्य में त्रिदिवसीय शिविर आयोजित हुई। जिसमें पूज्यश्री ने साधकों के साथ ज्ञान की महत्वता पर सत्संग किया था और व्यक्तिगत तौर पर हर एक साधक के साथ बातचीत करके ज़रूरी मार्गदर्शन दिया था। साधकों द्वारा 'आप्तसिंचन का रूटीन

जीवन, आज-कल और परसों' पर नाटक प्रदर्शित किया गया। साधकों ने पूज्यश्री के साथ इन्फॉर्मल समय बीताया, जिसमें साधकों ने पूज्यश्री के साथ रिवरफ्रन्ट पर वॉक किया था और साबरमती नदी में बोटिंग करने का आनंद उठाया था। 24 तारीख शाम को दादा दर्शन से पूज्यश्री ने मुंबई सत्संग के लिए प्रस्थान किया।

25 फरवरी 1 मार्च : मुंबई, घाटकोपर में सत्संग-ज्ञानविधि कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रथम दिन लगभग 350 सिनियर सिटिज़न महात्माओं ने 'फेमस-डब्बावाला' जैसी टोपी पहनकर पूज्य श्री का स्वागत किया। LMHT के बच्चों ने जन्म जयंती के पदों पर सुंदर नृत्य करके महात्माओं में भक्ति का नया जोश भर दिया। 'सेवा' के बारे में सत्संग हुआ। पूज्य श्री ने महात्माओं के साथ WMHT के कॉर्डिनेटरों द्वारा बनाया गया प्रसाद लिया। 26 तारीख को 'मान' और 27 तारीख को 'पॉज़िटिविटी' हिन्दी में सत्संग हुए। 28 तारीख को हिन्दी में की गई ज्ञानविधि में 1600 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। और लगभग 5000 महात्मा उपस्थित रहे। 'दादा दरबार' अंतर्गत लगभग 425 स्थानिक महात्माओं ने पूज्य श्री के दर्शन का लाभ लिया। 1 मार्च के दिन पूज्य श्री ने अपने स्कूल-कॉलेज और बिल्डिंग के पुराने मित्रों से मिलकर पुरानी यादें ताज़ा की और अपने प्रेरणादायी जीवन की बातें शेयर की। उनके साथ भोजन-प्रसाद लिया था।

4-6 मार्च : मुंबई से भूज हवाई-जहाज का सफर तय करके पूज्य श्री भूज त्रिमंदिर में दर्शन के लिए पधारे और महात्माओं से भी मिले। अंजार में प्राण-प्रतिष्ठा से पहले आयोजित सत्संग-ज्ञानविधि दौरान 1200 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। पूज्य श्री ने प्रतिष्ठा से पहले सभी मूर्तियों को बारिकी से निरिक्षण करके उन्हें फाइनल टच दिलवाया था। 6 मार्च को पूज्य श्री ने 46 वें ज्ञानदिवस की सुबह 10 से 1 दौरान अंजार त्रिमंदिर की प्राण-प्रतिष्ठा विधि की और सभी मूर्तियों में भगवान की चेतना भरी उतारी थी। शाम को प्रक्षाल-पूजन-आरती का लाभ महात्माओं को चार विभाग में दिया गया। श्री सीमंधर स्वामी भगवान की 6 फीट की मूर्तिवाला यह प्रथम त्रिमंदिर है। प्रतिष्ठा के बाद मूर्ति में चेतना देखकर महात्मा गद्गद् हो गए। रात की भक्ति में मंदिर पूरा भर गया था और बहुत सारे लोग दर्शन के लिए आए थे।

7 मार्च सुबह पूज्य श्री के हस्तों मंदिर के द्वार खोले गए थे। पूज्य श्री ने सभी भगवंतो के दर्शन किए और स्वामी एवं दादा की आरती की गई थी। द्वार खोलते समय पूज्य श्री ने मार्मिक बात करते हूए बताया कि 'मैं सच्चा हूँ,' 'अच्छा हूँ', 'होशियार हूँ,' 'समझदार हूँ,' इत्यादि सभी पर्दे हटेंगे तब अंतर के द्वार खुल जाएँगे और अंदरवाले भगवान के सच्चे दर्शन होंगे। सेवार्थियों के सत्संग में महात्माओं ने अपने सुंदर अनुभव का वर्णन किया और पूज्य श्री के चरणस्पर्श करके धन्य हो गए थे।

9-13 मार्च : सेफ्रोनी-महेसाना में अविवाहित युवाओं के लिए ब्रह्मचर्य शिविर आयोजित हुई। शिविर दौरान पूज्य श्री ने 'मान' और 'ब्रह्मचर्य' टॉपिक पर ज़रूरी ज्ञान की समझ पर सत्संग किया। आप्तपुत्र सत्संग, GD और व्यक्तिगत मार्गदर्शन प्राप्त करके साधकों की ब्रह्मचर्य की समझ और भी मज़बूत हो गई। 435 साधकों ने इस शिविर का लाभ लिया, जिन में से 25 पहली बार आए थे। ज़्यादातर साधकों को 3 घंटे की सामायिक का बहुत सुंदर अनुभव हुआ था। ब्रह्मचर्य संबंधित अलग-अलग टॉपिक पर 8 ग्रुपों द्वारा प्रदर्शन किया गया। रात्रि समय में ब्रह्मचर्य के लिए ज़रूरी समझ पर वर्कशोप, गरबा, नाटक, ज्ञानवाणी इत्यादि का आयोजन किया गया। पूज्य श्री के साथ डिनर एवं मोर्निंग वॉक का भी साधकों ने आनंद लिया।

12-16 मार्च : सेफ्रोनी-महेसाना की अविवाहित बहनों की शिविर पहले दो दिनों के लिए अडालज में एक नये ही अंदाज में हुई। इसमें शिविरार्थी बहनों द्वारा अंबा फूड, बुक स्टोल, जायजेन्टिक हॉल और विविध जगहों पर सफाई कार्य, खाना पकाना, और बुजुर्ग महात्माओं से मिलकर उन्हें सहायरूप बनना वगैरह प्रवृत्तियाँ की गई। सीमंधर सिटी लेक पर MBA बहनों द्वारा सामूहिक डिनर की तैयारी की गई थी। बाद में सेफ्रोनी-महेसाना में 'सेवा' संघबल और 'खुद का मोह पूरा करने के लिए कहाँ-कहाँ मनमानी हो जाती है?' इन टॉपिक पर तीन दिन पूज्य श्री के सत्संग हूए। आप्तपुत्री बहनों द्वारा GD और व्यक्तिगत मार्गदर्शन का लाभ 350 अविवाहित बहनों ने लिया।

PMHT (पेरेन्ट्स महात्मा) शिविर

दि. **5-9 मई** (शनि-बुध) - **सत्संग समय की घोषणा बाकी**

सूचना : 1) यह शिविर ज्ञान लिए हुए विवाहित महात्माओं के लिए ही रखी गई है। 2) इस शिविर में प्रथम दो दिन 'माता-पिता और बच्चों का व्यवहार' तथा बाद में दो दिन 'पति-पत्नी का दिव्य व्यवहार' तथा अंतिम दिन 'पैसों का व्यवहार' पुस्तक पर पूज्यश्री दीपकभाई द्वारा सत्संग होगा तथा आप्तपुत्रों तथा आप्तपुत्रीओं द्वारा ग्रुप सत्संग किए जाएँगे। हिन्दी भाषी महात्माओं के लिए रेडियो सेट के द्वारा हिन्दी में भाषांतर की सुविधा उपलब्ध होगी। भाग लेनेवाले महात्मा अपने साथ खुद का FM रेडियो और हेडफोन लेकर आए। (अगर आपके मोबाइल में FM सुविधा है, तो सत्संग स्थल पर आपके मोबाइल पर ही सत्संग का हिन्दी भाषांतर सुन सकेंगे।)

3) शिविर में भाग लेने के लिए अपने नज़दिकी सेन्टर में और अगर नज़दिक में कोई सेन्टर नहीं है, तो अडालज त्रिमंदिर के फोन नं. (079) 39830400 (सुबह ९-३० से १२ तथा दोपहर ३ से ६) पर अपना रजिस्ट्रेशन करवाएँ।

पूज्य नीरूमाँ को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत	✦ **'आस्था'** पर सोम से शनि रात 10-20 से 10-40 (हिन्दी में)
	✦ **'डीडी'-इन्डिया** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 तथा शाम 6 से 6-30 (हिन्दी में)
	✦ **'दूरदर्शन'-बिहार** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 तथा शाम 6-30 से 7 (हिन्दी में)
	✦ **'दूरदर्शन'-गिरनार** हर रोज़ पर सुबह 9 से 9-30 (गुजराती में)
	✦ **'अरिहंत'** पर हर रोज़ शाम 5 से 5-30 (गुजराती में)
USA	✦ **'TV Asia'** पर हर रोज, सुबह 7-30 से 8 EST (गुजराती में)
UK	✦ **'वीनस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8 से 8-30 (हिन्दी में)
	✦ **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8 से 8-30 (हिन्दी में)

पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत	✦ **'दूरदर्शन'-नेशनल** पर सोम से शुक्र सुबह 8-30 से 9, शनि सुबह 9 से 9-30 , रवि सुबह 6-30 से 7
	✦ **'दूरदर्शन'-मध्यप्रदेश** पर सोम से शनि दोपहर 3-30 से 4, रवि शाम 6 से 6-30 (हिन्दी में)
	✦ **'दूरदर्शन'-उत्तरप्रदेश** पर हर रोज़ रात 9-30 से 10 (हिन्दी में)
	✦ **'दूरदर्शन' गुजरात - गिरनार** पर सोम से शनि दोपहर 3-30 से 4 (गुजराती में)
	✦ **'दूरदर्शन' गिरनार** पर मंगल से गुरु रात 9-30 से 10-30, शुक्र से रवि रात 9-30 से 10 (गुजराती में)
	✦ **'अरिहंत' चेनल** पर हर रोज़ रात 8-30 से 9 (गुजराती में)
	✦ **'दूरदर्शन'-सह्याद्रि** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 (मराठी में)
USA	✦ **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 EST (हिन्दी में)
UK	✦ **'वीनस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8-30 से 9 (गुजराती में)
	✦ **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 (हिन्दी में)
Singapore	✦ **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 4-30 से 5 तथा सुबह 7 से 7-30 (हिन्दी में)
Australia	✦ **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 तथा सुबह 10 से 10-30 (हिन्दी में)
New Zealand	✦ **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 9-30 से 10 तथा रात 12 से 12-30 (हिन्दी में)
USA-UK-Africa-Aus.	✦ **'आस्था'** (डीश टीवी चेनल 849-युके, 719-युएसए) पर हर रोज़ रात 10 से 10-30

त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज : (079) 39830100, **राजकोट :** 9924343478, **भूज :** 9924345588, **गोधरा :** 9723707738, **मोरबी :** (02822)297097, **सुरेन्द्रनगर :** 9737048322, **अमरेली :** 9924344460,

अन्य सेन्टरों के संपर्क : अहमदाबाद: (079) 27540408, **मुंबई:** 9323528901, **वडोदरा (दादा मंदिर) :** 9924343335, **दिल्ली:** 9810098564, **बैंगलूर:** 9590979099, **कोलकता:** 9830093230

यु.एस.ए.-केनेडा: +1 877-505-DADA (3232), **यु.के.:** +44 330-111-DADA (3232), **ऑस्ट्रेलिया:** +61 421127947

अप्रैल 2016
वर्ष - 11 अंक - 6
अखंड क्रमांक - 126

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. GAMC - 1500/2015-2017
Valid up to 31-12-2017
LPWP Licence No. CPMG/GJ/15/2015
Valid up to 31-12-2017
Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set - 1
on 15th of each month.

'खुद' शुद्धात्मा और 'चंदू' फाइल नं-1

चंदूभाई का और आपका क्या लेना-देना? आप तो शुद्धात्मा हो गए न! चंदूभाई तो पड़ोसी है फाइल नं-1। आपको क्या लेना-देना? उसका कोई क्लेम हो तो मुझे बताओ। जुदा हो गए हैं हम। जुदा होने के बाद, दो भाईयों के खेत का बँटवारा करने के बाद ये दूसरी तरफ की भिंडी कोई लेगा नहीं, वर्ना यदि ले ली तो दोनों भाई झगड़ा करेंगे, बँटवारा होने के बाद। बँटवारे से पहले वे ले सकते थे सब। जब तक साझीदारी थी तब तक, बँटवारा होने से पहले ही गड़बड़ थी, बँटवारा होने के बाद नहीं। साझा है ऐसा समझकर ही ये सबकुछ किया। उसमें मैंने डिमार्केशन (भेद रेखा) लाइन भी डाल दी है। अब हमेशा के लिए पहेली सुलझ गई है। लेकिन फिर भी कहेगा, 'मुझे खाँसी हो गई।' अरे, खाँसी किसे हुई है, उसे जानना है। वेदनीय गुण जो है, वह पड़ोसी का है। अब वेदनीय गुण अपना नहीं है। हमें खाँसी आए तब ऐसा लगना चाहिए कि खाँसी आई है, 'मुझे आई' ऐसा नहीं लगना चाहिए।

-दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner. Printed at Amba Offset, Basement, Parshvanath Chambers, Usmanpura, Ahmedabad-380014.

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

अहमदाबाद

13-14 मई (शुक्र-शनि), रात 8 से 11 - **सत्संग** तथा **15 मई** (रवि), शाम 6-30 से 10 - **ज्ञानविधि**

16 मई (सोम), रात 8 से 11 - **आप्तपुत्र सत्संग**

स्थल : श्री सौराष्ट्र पटेल समाज प्लोट, भक्ति सर्कल रोड, निकोल, (गुजरात). **संपर्क :** 9909545999

सुरत

21 व 23 मई (शनि व सोम), रात 8 से 11 - **सत्संग** तथा **22 मई** (रवि), शाम 7-30 से 11 - **ज्ञानविधि**

स्थल : श्री स्वामी आत्मानंद सरस्वती विद्यासंकुल, धारुका कोलेज, वराछा रोड. **संपर्क :** 9574008007

बेंगलोर

11 जून (शनि), शाम 6 से 9 - **सत्संग** तथा **12 जून** (रवि), शाम 5-30 से 9 - **ज्ञानविधि**

12 जून (रवि), सुबह 10-30 से 12-30 - **आप्तपुत्र सत्संग, 13 जून** (सोम), **आ. सत्संग - समय के लिए संपर्क**

स्थल : ज्ञानज्योति ओडिटोरीयम, सेन्ट्रल कोलेज केम्पस, पेलेस रोड, मैसुर बैंक सर्कल पास. **संपर्क :** 9590979099

हिन्दी सत्संग शिविर - वर्ष 2016

27 मई (शुक्र) - सुबह 10 से 12 - **प्रतिक्रमण - पारायण** तथा शाम 4-30 से 7 - **पति-पत्नी का दिव्य व्यवहार - सत्संग**

28 मई (शनि) - सुबह 9 से 11-30 तथा शाम 4-30 से 7 - **पूज्यश्री द्वारा विशेष सत्संग**

29 मई (रवि) - सुबह 9 से 11-30 - **जनरल प्रश्नोत्तरी सत्संग** तथा शाम 4-30 से 7 - **ज्ञानविधि**

30 मई (सोम) - सुबह 9 से 10-15 - **शिविरार्थीओं के लिए दर्शन**,

सुबह 10-15 से 11-30- **मा-बाप बच्चों का व्यवहार - सत्संग** तथा शाम 4-30 से 7-**पाँच आज्ञा पर विशेष सत्संग**

31 मई (मंगल) - सुबह 6-30 बजे से **पूज्यश्री के संग अंबाजी** की एक दिवसीय यात्रा के लिए रवाना

सूचना : यह शिविर गुजराती भाषा नहीं जानने वाले मुमुक्षु-महात्माओं के लिए साल में एक बार हिन्दी में विशेष रूप से आयोजित की जाती है। **इस शिविर के लिए 15 मार्च से 15 मई 2016 तक रजिस्ट्रेशन होगा।** निम्नलिखित सत्संग केन्द्रों में से अपने नज़दीकी सत्संग केन्द्र पर अपना रजिस्ट्रेशन करवा सकते है और यदि आपके नज़दीक में कोई सत्संग केन्द्र नहीं है, तो अडालज मुख्य सत्संग केन्द्र के रजिस्ट्रेशन विभाग में फोन नं. **079-39830400** पर (सुबह 9-30 से 1 और दोपहर 3 से 6) अपना रजिस्ट्रेशन करवा सकते है। रजिस्ट्रेशन कराने के बाद यदि आप किसी कारणवश नहीं आनेवाले हो, तो अपना रजिस्ट्रेशन केन्सल करवाना न भूलें।

दिल्ली	: 9810098564	**भुवनेश्वर**	: 9668159987	**नागपुर**	: 9325412107
जलंधर	: 9814063043	**रायपुर**	: 9329644433	**जलगाँव**	: 9420942944
वाराणसी	: 9795228541	**भिलाई**	: 9827481336	**मुंबई**	: 9323528901
जयपुर	: 8233363902	**इन्दौर**	: 9039936173	**पूणे**	: 7218473468
पाली	: 9461251542	**भोपाल**	: 9425023328	**हैद्राबाद**	: 9885058771
पटना	: 7352723132	**जबलपुर**	: 9425160428	**बंगलूर**	: 9590979099
मुजफ्फरपुर	: 7209956892	**औरंगाबाद**	: 8308008897	**हुबली**	: 9739688818
कोलकता	: 9830093230	**अमरावती**	: 9422915064	**चेन्नई**	: 9380159957

अडालज में अविवाहित युवकों के लिए हिन्दी में ब्रह्मचर्य शिविर - दि. 1-2 जून, 2016

जो युवक इस ब्रह्मचर्य शिविर में भाग लेना चाहते है, उसकी उम्र २१ से ३५ के बीच और आत्मज्ञान लिए कम से कम १ साल हुआ होना जरूरी है। कृपया अधिक जानकारी और रजिस्ट्रेशन के लिए 9723707737 पर संपर्क करें।